www.ghoonghatkibagawat.com E-mail : ghoonghatkibagawat@gmail. Com Facebook: ghoonghatkibagawat

GKB

घूँघट की बगावत

RNI NO : UPHIN/1999/01282

प्रत्येक रविवार को प्रकाशित

हिन्दी साप्ताहिक समाचार पत्र

वर्षः 19 अंकः 47 गोरखपुर, 14 जून, 2020, पृष्ठः 8 मूल्यः 2/-

मौसम की मार! कहीं बारिश , कहीं गर्म लू का कहर

जयपुर। राजस्थान के पूर्वी और पश्चिमी इलाकों के कई स्थानों पर रविवार सुबह तक भारी से मध्यम बारिश हुई जबकि पश्चिमी इलाकों के कुछ स्थान लू की चपेट में हैं और वहां तापमान बढ़ने से गर्मी का प्रकोप जारी रहा। मौसम विभाग के प्रवक्ता ने बताया कि रविवार सुबह तक जयपुर के कोटपूतली में 58 मिलीमीटर, बीकानेर के कोलायत में 50 मिलीमीटर, उदयपुर में सलूम्बर में 47 मिलीमीटर, अलवर के कोटकासिम में 45 मिलीमीटर, डूंगरपुर के निथुआ में 38 मिलीमीटर, उदयपुर के सरारा में 37 मिमीमीटर, अलवर में 36.8 मिलीमीटर, डूंगरपुर के गणेपुरा और साबला में 35कृ35 मिलीमीटर, झुंझुनूं के नवलगढ में 33 मिलीमीटर, बांसवाडा के घाटोल में 33 मिलीमीटर और अन्य अनेक स्थानों पर 29 मिलीमीटर से 10 मिलीमीटर तक बारिश दर्ज की गई।

उन्होंने बताया कि रविवार सुबह से शाम तक डबोक (उदयपुर)में 0.4 मिलीमीटर बारिश दर्ज की गई। उन्होंने बताया कि श्रीगंगानगर 44.9 डिग्री सेल्सियस के साथ राज्य का सबसे गर्म स्थान रहा। जैसलमेर में अधिकतम तापमान 43.8 डिग्री सेल्सियस, बीकानेर 43.7 डिग्री सेल्सियस, बाडमेर 42.7 डिग्री सेल्सियस, जोधपुर में 41.7 डिग्री सेल्सियस, चूरू 41.3 डिग्री सेल्सियस, जयपुर 40.1 डिग्री सेल्सियस, कोटा 39.6 डिग्री सेल्सियस, अजमेर में 39.5 डिग्री सेल्सियस, डबोक 37.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। वहीं राज्य के अधिकत प्रमुख शहरों में न्यूनतम तापमान 31.3 डिग्री सेल्सियस से लेकर 27 डिग्री सेल्सियस तक दर्ज किया गया। विभाग ने आगामी 24 घंटों के दौरान अलवर, अजमेर, बांसवाडा, बूंदी, बांरा, चित्तोडगढ, डूंगरपुर, झालावाड, जयपुर, कोटा, टौंक, राजसमंद प्रतापगढ़ और उदयपुर में कहीं कही मेघगर्जनध् वङ्कापात के साथ तेज हवाओं के चलने और झुंझुनूं, सीकर, बीकानेर, बाडमेर, जैसलमेर,जोधपुर, चूरू और श्रीगंगानगर में कहीं कहीं पर लू चलने की संभावना जताई है।

लेफ्टिनेंट जनरल सी एन सोमन्ना का निधन

लेफ्टिनेंट जनरल (सेवानिवृत्त) सी एन सोमन्ना का शनिवार को कर्नाटक के कुर्ग में निधन हो गया। वह 92 वर्ष के थे।

लेफ्टिनेंट जनरल सी एन सोमन्ना उम्र से संबंधित बीमारियों से काभी समय से परेशान थे उन्होंने अपने आवास विराजपथ पर अंतिम सांस ली। लेफ्टिनेंट जनरल सीएन सोमन्ना ने 1984-85 के दौरान सेना के उपाध्यक्ष के रूप में कार्य किया था, जब देश ने अमृतसर, पंजाब में स्वर्ण मंदिर में आतंकवादियों को शरण देने के लिए ऑपरेशन ब्लू स्टार का हिस्सा बनें थे।रक्षा मंत्रालय पीआरओ, बेंगलूरु ने ट्वीट कर बताया कि लेफ्टिनेंट जनरल सोमन्ना ने शनिवार शाम 4.10 बजे आखिरी सांस ली। उनका अंतिम संस्कार रविवार दोपहर एक बजे कुर्ग में किया जाएगा। लेफ्टिनेंट जनरल सोमन्ना का अंतिम संस्कार रविवार को कुर्ग में ही किया गया।

सोमन्ना, जो जिले के सबसे पुराने जीवित दिग्गजों में से एक थे, अपनी वीरता के लिए जाने जाते थे। जब सेना ने अगस्त 2016 में जिले में मेगा दिग्गजों की रैली का आयोजन किया था, तो इस रैली में सोमन्ना भी शामिल होने वाले थे लेकिन खराब सेहत के कारण वह शामिल न हो सके। इस रैली में तत्कालीन सेना प्रमुख जनरल दलबीर सिंह सुहाग ने भी भाग लिया था। जब सिंह को पता चला कि सोमन्ना अपने बीमार स्वास्थ्य के कारण इसे बनाने में सक्षम नहीं है, तो सिंह ने सेना के उप-प्रमुख लेफ्टिनेंट जनरल बिपिन रावत (सेना के वर्तमान प्रमुख) के साथ, सोमन्न के लिए 40 किमी का रास्ता छोड़ दिया था।आपको बता दें कि लेफ्टिनेंट जनरल सोमन्ना ने फील्ड मार्शल के एम करियप्पा के साथ इंफेंट्री की तीन बटालियन को ब्रिगेड ऑफ गार्ड में तब्दील किया था। वह दो गॉर्डर्स (एक पंजाब) में एडजुटेंट भी बने। सेना में कैप्टन रहते हुए वह इंडियन मिलिट्री अकादमी के प्रशिक्षक भी बने। उन्होंने उदयपुर में चार गॉर्ड्स की कमान संभाली। सन् 1971 के भारत-पाक युद्ध में लेफ्टिनेंट जनरल सोमन्ना ने ब्रिगेडियर रहते हुए डीडीएमओ की जिम्मेदारी संभाली। वह लेह में तीन दिन कमांडर थे, जहां उन्होंने आइस हॉकी की शुरुआत की।

कोरोना महामारी में दायित्वहीन रहे निजी चिकित्सालय

अनुकूल परिस्थितियों में भी निजी अस्पतालों में जिस प्रकार से मरीजों का शोषण होता है और इलाज की आड़ में निजी अस्पताल अपनी जेबें भरते हैं उनके लिए निजी अस्पतालों के लिए कुछ दायित्व और गाइड लाइन निर्धारित किये जाने की आवश्यकता है। ऐसे अस्पतालों को मोआी कम्र का जरिया बना कर नहीं छोड़ा जा सकता है। अक्सर छोटी-मोटी बीमारियों को गंभीर बताकर लाखो का वारा न्यारा कर लिया जाता है। ऐसे अस्पतालों की एक लम्बी फेहरिस्त है।

अभी हाल में निजी अस्पतालों ने कोरोना वायरस के संक्रमणकाल में कोरोना पीड़ितों का इलाज किये जाने को लेकर अपने हाथ खड़े कर दिये हैं (अपवादों को छोड़दिया जाये)। संसाधनों की कमी की आड़ में यह लोग अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों से मुंह चुरा रहे हैं जो मानवीय आधार पर तो अनुचित है ही साथ ही व्यवहारिकतौर पर निजी अस्पताल संचालको को यह शोभा नहीं देता।

ध्यातव्य है कि उत्तर प्रदेश में करीब 15 हजार निजी अस्पताल व नर्सिंग होम हैं, लेकिन इसमें से कोई भी कोरोना मरीज के इलाज के लिए तैयार नहीं है। सर्वाधिक आश्चर्यजनक बात तो यह है कि आयुष्मान भारत योजना के तहत पंजीकृत निजी अस्पताल भी कोरोना रोगियों के इलाज के लिए तैयार नहीं जबकि कोरोना महामारीसे पूर्व आयुष्मान भारत का लाभार्थी मरीजों का इलाज करने के लिए गलाकाट प्रतियोगिता चलती रही। उस वक्त निजी अस्पताल संचालकों ने अपने यहां मिलने वाली सुविधाओं को लेकर बड़े-बड़े दावे किये। अब यही अस्पताल सुविधाओ का रोना रोकर इलाज करने से अपने हाथ खींचते नजर आ रहे हैं। ऐसे में आगरा के एक प्राइवेट अस्पताल नयति हास्पिटल के संचालकों ने अपने हाथ आगे बढ़ाते हुए कोरोना मरीजों का इलाज शुरू किा।

कोविड-19 के मरीजों और उनके तीमारदारों में दबी जबान से यह भी चर्चा आम है कि कोरोना मरीजों का इलाज किन अस्पतालों में किया जायेगा केन्द्र सरकार ने इस सन्दर्भ में मानक तय कर रखे हैं। निजी अस्पताल जानबूझकर इन मानकों को पूरा नहीं कर रहे जिससे कोरोना मरीजों का इलाज इन्हें न करन पड़े।

कोविड-19 का दौर आया है और गुजर जायेगा लेकिन निजी चिकित्सकों की जी जो छवि पहले से ही खराब थी कोरोना काल में और भी दाग़दार हो गई है। चिकित्सक कहीं भी प्रैक्टिस करें उन्हें धरती का भगवान की संज्ञा दी जाती है पर कोरोना के सन्दर्भ में निजी चिकित्सकों और अस्पतालों का रवैया इस धारणा को चोट पहुंचाने वाला रहा।

उ.प्र. के प्रमुख सचिव (स्वास्थ्य) अमित मोहन प्रसाद ने इस सम्बन्ध में एक वक्तव्य दिया था कि बड़े निजी अस्पताल व प्राइवेट मेडिकल कालेजों में ट्रायज एरिया, आइसोलेशन वार्ड एवं एक्जिट व इंट्री के लिए अलग-अलग प्रवेश व निकासी द्वार की व्यवस्था के साथ ही इन्हें इलाज की छूट दी गई है। बस, इसी का लाभ उठा रहे हैं अस्पताल संचालक। इसी तारतम्यता में इंडियन मेडिकल एसोसिएशन का कहना है कि निजी अस्पतालों में पर्याप्त संसाधन नहीं हैं अलीगढ़ के एक निजी अस्पताल की घटना का उदाहरण देते हुए आईएमए ने कहा है कि गत दिनो सामान्य इलाज में एक मरीज कोरोना पॉजिटव निकल आया तो पूरे स्टाफ की कोरोना जांच अस्पताल प्रशासन को करानी पड़ गई। ऐसी सूरत में अस्पताल की जितनी कमाइ नहीं हुई उससे ज्यादा खर्च कोरोना जांच में हो गयया।

यहां पर यह भी स्मरणीय तथ्य है कि एक रोगी के इलाज में कम से कम एक लाख रुपया तक का खर्च आ रहा है। ऐसे में इतना महंगा इलाज करवाने कौन निजी अस्पताल जायेगा। मेरठ के सुभारती मेडिकल कॉलेज और ग्रेटर नोएडा के शारदा हास्पिटल ने सरकार की मंशानुरुप कोरोना मरीजों के इलाज के लिए प्राइवेट वार्ड खोलने की इच्छा जाहिर की है।

जहाँ एक ओर सरकारी अस्पताल कोरोना से जंग लड़ रहे हैं वहीं निजी अस्पतालों का महामारी के समय कोरोना पीड़ितों का इलाज करने के बजाय ढुलमुल रवैया अपनाया जाना बेहद शर्मनाक और चिंताजनक है क्योंकि कोरोना महामारी में अस्पतालों, डॉक्टरों चिकित्साकर्मियों को ही मोर्चा लेना है।

अगर बात उत्तर प्रदेश के सन्दर्भ में करते हैं तो पाते हैं कि यहाँ के सरकारी अस्पतालों के डाक्टरों, और स्टाफ ने अदम्य साहस, समर्पण और सेवा भाव का परिचय देते हुए कोरोना संक्रमण के फैला को रोकने में सहायता दी लेकिन निजी अस्पतालों द्वारा संकट के इस दौर में अपने दायित्वों से नजरें फेर लेना न तो चिकित्सा पेशे और न ही इसकी भावना के अनुरूप है। साथ ही साथ निजी अस्पताल के चिकित्कों का यह व्यवहार राष्ट्रीय एकता को मजबूत कने वाला है। जब से कोरोना ने अपना उग्ररुप धारण किया है तब से देश के शीर्षस्थ उद्यमियों, पुलिस से लगायत आम जनता तक ने जिस तरह से एक दूसरे को सहारा दिया है उसे देखते हुए यह विश्वास करना मुश्किल है कि तमाम सरकारी सुविधाएं हासिल करके अपना धंधा चलाने वाले निजी अस्पताल के संचालक कोरोना महामारी के समय अपनी जिम्मेदारियों से मुंह मोड़ लिया है।

ग्राम गहिला सील, पुलिस तैनात

देवरिया। रुद्रपुर क्षेत्रान्तर्गत ग्राम गहिला में बाहर से आई युवती में कोरोना पाजिटिव पाए जाने के बाद ग्राम गहिला को प्रशासन ने सील कर दिया।

गांव में जाने वाले सभी रास्तों पर बैरिकेडिंग करने के बाद फोर्स तैनात कर दी गई। इन बैरियर पर 24 घंटे पुलिस की ड्यूटी रहेगी।

उमाशंकर मझवार ने लगाई जानमाल की रक्षा की गुहार

गोरखपुर। समाचार पत्र विक्रेता संघ के जिलाध्यक्ष उमाशंकर मझवार ने अपने पड़ोसी रामसिंह पुत्र शमशेर सिंह पर जानमाल की धमकी दिये जाने का आरोप लगाते हुए एक पत्र वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक को दिया, जिसमें उन्होंने इस बात का उल्लेख किया है कि उनका पड़ोसी नशे की हालम में अक्सर उनके घर पर चढ़ जाता है और पूरे परिवार को भद्दी-भद्दी गालियां देता है और जानमाल की धमकी के साथ पूरे परिवार को फर्जी मुकदमे में फंसा देने की बात कहता है।

श्री मझवार ने अपने पत्र पड़ोंसी के बारे में इस बात को भी लिखा है कि यह पड़ोसी मनबढ़ किस्म का व्यक्ति है। टैम्पो चलाता है और शराब के नशे में सारे मोहल्ल वालों को गालियां बकता है।

सूच्य है कि इससे पूर्व इस टैम्पोचालक ने अपने पड़ोसी फल विक्रेता के साथ भी झगड़ा किया। इस झगड़े के बद टेम्पो चालक ने अपनी अंगुली काट लिया। पिछले महीने अपने उपर डीजल डालकर आग लगाकर आजाद चैक की तरफ भागने लगा किसी तरह से इसे पकड़ कर वापस लाया गया। इसके बाद से यह पडोसी यही कहता रहता है कि हम मरेंगे और मोहल्ले वाले फंसेगे।

उमाशंकर मझवार चूंकि एक समाचार पत्र विक्रेता है और रात बेरात उनका घर से बाहर आना जाना लगा रहता है इसलिए उन्होंने एसएसपी को पत्र लिखकर मामले से अवगत कराते हुए जानमाल की रक्षा की गुहार लगाई है।

राष्ट्रीय शिक्षक संचेतना की केंद्रीय समिति का विस्तार

☐ डॉ. पंवार महासचिव, उषा शर्मा,श्रद्धा जैन उपाध्यक्ष, प्रभा बैरागी सचिव नियुक्त'

नई दिल्ली।राष्ट्रीय शिक्षक संचेतना के अध्यक्ष डॉ. प्रभु चैधरी ने केंद्रीय कार्यसमिति का विस्तार करते हुवे नवीन नियुक्तियां की है। संचेतना के प्रवक्ता सुंदर लाल जोशी ने बताया देश के प्रतिष्ठित पत्रकार,साहित्यकार एवं समाजसेवी डॉ. शम्भु पंवार (झुंझुनु) को राष्ट्रीय महासचिव, श्रीमती उषा शर्मा(इन्दौर) को राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, श्रीमती श्रद्धा जैन उपाध्यक्ष व प्रभारी प्रदेश महाराष्ट्र इकाई,श्रीमती प्रभा बैरागी(उज्जैन) को राष्ट्रीय कार्यालय सचिव के पद पर नियुक्ति की है। उल्लेखनीय है कि राष्ट्रीय शिक्षक संचेतना पिछले दो दशक से राष्ट्रहित एवं राष्ट्र भाषा हिंदी के प्रचार,प्रसार व विकाश के लिये वर्ष में अनेको साहित्यिक एवं सम्मान समारोह के माध्यम से शिक्षको एवं साहित्यकारों को एकजूट करके माँ भारती की सेवा कर रही है।संचेतना संस्था में नवीन नियुक्ति पर संरक्षक डॉ. शैलेन्द्र कुमार शर्मा, राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. प्रभु चैधरी, राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष

सुवर्णा जाधव,(मुम्बई), वरिष्ठ उपाध्यक्ष डॉ. शिवा लोहारिया (जयपुर), रेणूका अरोडा, रेखा आस्थाना (गाजियाबाद), राकेश छोकर(दिल्ली), डॉ. अर्चना दुबे(मुम्बई), सुश्री प्रतिभा बैरागी(उज्जैन), डॉ. रेणू सिरोया उदयपुर, डॉ. प्रवीण जोशी, दिनेश परमार प्रदेशाध्यक्ष इन्दौर, पुष्पा गरोठिया भोपाल, विवेक सोनागिर, प्रवक्ता रागिनी स्वर्णकार, दुर्गा बैरागी, पायल परदेशी, अनिल ओझा, राम शर्मा, डॉ. चित्रा जैन, राजेन्द्र कांठेड़, सुंदरलाल जोशी सूरज, हरचरणसिंह चावला, डॉ. संजीव कुमरावत, हरेराम वाजपेयी, अमृता अवस्थी, डॉ. निशा जोशी इन्दौर, मोहनलाल वर्मा जयपुर, डॉ. दीपा अग्रवाल अजमेर, डॉ. चेतना उपाध्याय, विरेन्द्र लोढ़ा भीलवाड़ा, एम.डी. कनेरिया नाथद्वारा, डॉ. अल्पना आर्य, गोपाल कोशल, मनीष पिपाले, मनीषा सक्सेना, ऋषभ जैन, डॉ. सुशीला पाल, कृष्णा श्रीवास्तव, ललिता सिसोदिया, कारूलाल जमाडा, हरिशंकर पाटीदार, अनिल सेठिया, नरेन्द्र रघुवंशी, प्रियंका द्विवेदी प्रयागराज ने हर्ष व्यक्त करते हुए बधाई संदेश प्रेषित किये है।

संकल्प स्वावलम्बी उत्पादन व्यवस्था बनाने का

उद्योग जगत को सम्बोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश की क्षमता और हौसले को रेखांकित करते हुए कहा कि यह कठिन समय है, लेकिन देश ने ऐसे हालात पहले भी देखा है और उससे कामयाबी के साथ उबरा है। कोरोना संक्रमण को नियंत्रित करने की कोशिशों के साथ अर्थव्यवस्था में आई गिरावट की भरपाई कर उसे पटरी पर लाने की कवायदें पिछले कई दिनों से चल रही हैं। एक बड़े आर्थिक पैकेज के साथ अनेक नीतिगत फैसलों से मौजूदा-चुनौतियों से निपटने का एक मजबूत आधार सरकार ने उपलबध कराया है। लेकिन इस प्रयास में हमेशा की तह उद्योग जगत को बड़ी भूमिका निभानी है। किसानों की आमदनी बढ़ाने, खेती-किसानी को फायदेमंद बनाने के लिए जो हालिया कदम उठाये गये हैं, वे पूर्व की सरकारों की पहलों की अपेक्षा कहीं अधिक दूरदर्शी सोच और दीर्घकालिक प्रभाव की संभावना से युक्त हैं। इसी प्रकार से छोटे और मझोले उद्योगों को पूंजी मुहैया कराने तथा उनके लिए कारोबारी सुगमता का माहौल बनाने के लिए की जा रही कोशिशें अर्थव्यवस्था के लिए एक बड़ा आधार तैयार कर रही है। हमें किसी चमत्कार की आशा ही नहीं रखनी चाहिए लेकिन मुस्तैदी के साथ हम अपने संकल्पों को पूरा करने में जुटे रहें तथा व्यक्तिगत एवं राष्ट्रीय स्तर पर निराशा व नकारात्मकता से स्वयं को ग्रस्त न होने दें फिर कोई भी बाधा हमें विकास की राह पर अग्रसर होने से नहीं रोक सकती है। राष्ट्रीय आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए प्रधानमंत्री ने आत्म निर्भर भारत का मंत्र देश को दिया। यदि हम महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आत्मनिर्भर होकर स्वावलम्बी उत्पादन व्यवस्था बना लेते हैं तो भविष्य में ऐसी कठिनाइयों का सामना हम आसानी से कर सकेंगे।

जांच रिपोर्ट निगेटिव, तत्काल प्रभाव से, आदेश निरस्त

गोरखपुर। कोविड-19 के दृष्टिगत प्रभावी लॉकडाउन के दौरान मौजा बरगदवा ब्लाक चरगावां थाना चिलुआताल, तथा मु.महादेवा झारखण्डी टू.न.-1 (मंदिर रोड) थाना कैण्ट में एक-एक कोरोना व्यक्ति पाये जाने के कारण कोरोना संक्रमण के फैलाव को रोकने के दृष्टिगत से उक्त मौजे/मुहल्ले के 250 मीटर एवं 500 मीटर के परिधि क्षेत्र को कन्टेनमेंट एवं बफर जोन घोषित करते हुए उक्त मौजे/मुहल्ले की निर्धारित परिधि सीमा को पूरी तरह से सील करते हुए उक्त परिधि सीमा में आवागमन एवं खाद्य दुकानों/प्रतिष्ठानों को खोलने से प्रतिबंधित किया गया था। चूंकि उक्त मौजे/मुहल्ले में कोरोना संदिग्ध की जांच रिर्पोट निगेटिव पायी गयी है जिसके कारण शासन के निर्देशानुसार उक्त मौजे/मुहल्ले को कोरोना संक्रमण के फैलाव को रोकने हेतु लगाया गया प्रतिबंधात्मक आदेश मौजा बरगदवां ब्लाक चरगावां में 22 मई 2020 तथा मु.महादेवा झारखण्डी में 25 मई 2020 से तत्काल प्रभाव से निरस्त किया जाता है।

इसी तारतम्यता में कोविड-19 के दृष्टिगत प्रभावी लॉकडाउन के दौरान तिलक मैरेज हाल कोतवाली, जिसे कोविड-19 के दृष्टिगत कोरंटाइन सेंटर बनाया गया था, में रखे गये 33 व्यक्तियों में से 08 व्यक्तियों में कोरोना लक्षण पाया गया था, को आइसोलेशन हेतु बी0आर0डी0 मेडिकल कालेज भेजा गया तथा अवशेष 25 व्यक्तियों में कोरोना संक्रमण के फैलाव के दृष्टिगत तिलक मैरेज हाउस थाना कोतवाली के दक्षिण तरफ सड़क का 400 मीटर का एरिया पुरी तरह से सील करते हुए उक्त परिधि सीमा में आवागमन एवं खाद्य दुकानों/प्रतिष्ठानों को खोलने से प्रतिबंधित किया गया था। चूंकि उक्त कोरंटाइनसेंटर में रखे गये 25 अवशेष व्यक्तियों में कोरोना का कोई लक्षण न पाये जाने के कारण अपने घर आ चुके है जिसके दृष्टिगत उक्त मुहल्ले में कोरोना संक्रमण के फैलाव को रोकने हेतु लगाया गया प्रतिबंधात्मक आदेश 28 मई 2020 तत्काल प्रभाव से निरस्त किया जाता है।उक्त जानकारी ज्वाइंट मजिस्ट्रेट उप जिलाधिकारी सदर ने दी।

छप्पर के आवास में रहने को विवश गरीब परिवार

सिद्धार्थनगर। जोगिया ब्लॉक क ग्राम पंचायत गोनहा मे मीना पिछले तीन वर्षों से एक अदद आवास के लिए ब्लॉक ब्लाक की परिक्रमा रही है।

सूच्य है कि यह परिवार बेहद गरीब है और तीन बच्चों के साथ एक छप्पर के घर में निवास कर रही है पति सुरेश मजदूरी करके बच्चों का जीवन यापन कर रहे हैं, मीना का आवास सूची में सात नंबर पर नाम अंकित है बावजूद इसके मीना की आवाज को दबा दिया जा रहा है। मीना के पति की पीड़ा सुनकर हर आदमी दंग रह जाएगा। जब बरसात होती है तब यह लोग बाध या दूसरे घर का सहारा लेते हैं बरसात में रहने का कोई ठिकाना नहीं है।

इनका यह भी कहना है कि इस गांव में जहां अपात्रों को आवास दिया जाता है। वहीं पात्र लोग आवास के लिए भटकते रहते हैं, इस ग्राम पंचायत एवं ब्लॉक की यह विडंबना है,ग्राम पंचायत अधिकारी अनिल मिश्रा जी कहते हैं बजट आते ही इनको आवास दे दिया जाएगा क्योंकि इनका सूची में नाम है।

मामला मेरे संज्ञान में है समस्या का जल्द समाधान करा दिया जाएगा। **-एजाज अहमद,** खंड विकास अधिकारी

पंपिंग स्टेशन और रेगुलेटर्स का किया निरीक्षण

गोरखपुर। सिटी मजिस्ट्रेट अभिनव रंजन श्रीवास्तव द्वारा पंपिंग स्टेशन और रेगुलेटर्स का निरीक्षण किया गया। जहाँ जल भराव और बाढ़ के दृष्टिगत को देखते हुए सिटी मजिस्ट्रेट ने पंपिंग स्टेशन में पंपिंग सेट को खुद चला कर चेक किया। इस मौके पर चीफ इंजीनियर नगर निगम और एक्सईएन सिंचाई विभाग मौजूद रहे।

अरशद खुर्शीद ने भाजपा पर कसा तंज

सिद्धार्थनगर।इटवा विधानसभा क्षेत्र से बसपा के पूर्व प्रत्याशी रहे हाजी अर्शद खुर्शीद ने अपने इटवा स्थिति कार्यालय पर गत रविवार को एक प्रेस कांफ्रेंस की। जिसके माध्यम से उन्होंने कि भाजपा सरकार में हर तरफ जंगल राज कायम हो गया है । शासन-प्रशासन आम जनमानस की भलाई के लिए काम नहीं कर रहे हैं। हर तरफ जनता में निराशा एवं लाचारी दिखाई दे रही है। शाहपुर सिंगार जोत मुख्य मार्ग सहित क्षेत्र की सभी बदहाल सड़को की दयनीय दशा पर भी अरशद खुर्शीद ने सवाल उठाते हुए कहा, भाजपा सरकार केवल बड़बोला पन अपना रही है। काम को जमीनी स्तर पर नहीं उतार रही है। वही इटवा विधायक पर भी तंज कसते हुए कहा की बेसिक शिक्षा प्रणाली के सुधारने की लाख दावे किए जा रहै है लेकिन एक अध्यापक का 25-25 स्थानों से एक साथ पढ़ा करके करोड़ों रुपए का वेतन एक साथ ले रही है। शिक्षा विभाग आखिर क्या कर रहा है सो रहा है। पढ़े लिखे लोग घूम रहे हैं। नटवरलाल बाजी मार रहे हैं। क्षेत्र व जिले में किसी बड़ी फैक्ट्री के ना होने पर अरशद खुर्शीद ने तंज कसा। जिले बड़े-बड़े नेताओं मंत्री व विधानसभा ध्यक्ष के होते हुए भी हमारा जिला सिद्धार्थनगर अत्यंत पिछड़े जिलों की सूची में शुमार है। यहां एक भी फैक्ट्रियां नहीं है। जिससे क्षेत्र के पढ़े-लिखे लोगों को रोजगार मिल सके। कोरोना महामारी में पलायन को लेकर के केंद्र और राज्य सरकार पर तंज करते हुए अरशद खुर्शीद ने कहा कि इस महामारी से निपटने के लिए सरकार अगर प्रभावी कदम उठाई होती। इन प्रवासी मजदूरों को जहां वह बाहर रह रहे थे। वहीं पर उनके लिए उचित व्यवस्था बनाई होती तो आज इतने बड़े स्तर पर पलायन नहीं होता,और यह महामारी इतने ब्यापक स्तर पर नही बढ़ी होती।

गाँव के गरीब मजदूर इतना परेशान नहीं होते और उन्हें कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ता। पलायन के मामले में पूरे प्रदेश में सिद्धार्थ नगर अव्वल रहा। इसका कारण यह है कि सिद्धार्थ नगर में किसी भी रोजगार को बढ़ावा नहीं दिया जा रहा है जिससे यहां के पढ़े-लिखे शिक्षित बेरोजगार पलायन करने को मजबूर हैं, और वह बाहर जाकर के रोजी-रोटी की तलाश करने कोमज़बूर है।

कोरोनॉ जागरूकता मुहिम में शामिल हुई बनारस की अंशिका सिंह

सिद्धार्थनगर। अध्यक्ष व्यापार मण्डल प्रभात जायसवाल ने इस कोरोना महामारी में लोगो की लगातार सेवा तो कर ही रहे हैं साथ ही उन्होंने जागरूक करने का एक अनोखे अभियान भी चला रखा है, फेसबुक लाइव जिसमें प्रदेश व देश के प्रतिभावान युवा लाइव आ कर अपनी प्रतिभा से लोगो को जागरूक कर रहे है साथ ही साथ इस लॉकडाउन में लोग मानसिक अवसाद से ग्रसित न हो इसलिए उनका मनोरंजन भी कर हैं साथ ही नगर के बेटियों के प्रतिभा को बढ़ावा देने में यह कारगर साबित हो रहा है। रविवार को जब सारेगामापा लिटिल चेम्स फेम की अंशिका सिंह लाइव आईं तो अपने एक से एक बेहतरीन गानों से लोगो को जोड़े रखा वही जब आप ने नज़रो ने समझा

प्यार के काबिल मुझे अंशिका ने प्रस्तुति दी तो युवाओ ने लाइक और कमेंट कर के अपना जोश और प्यार दिखाया वही कोरोनॉ योद्धाओं के सम्मान में जब अंशिका ने अपनी प्रस्तुति दी तो लोगो की आँखे नम हो गयी, लोग कमेन्ट के माध्यम से गानों की फरमाइश करते रहे और अंशिका घण्टो सब की फरमाइस पूरी करती रही, पेज संचालक अध्यक्ष प्रभात जायसवाल ने कहा की अंशिका हमारे मुहिम में शामिल हुई उनका मैं आभार प्रकट करता हूं निश्चित ही हमारे यहाँ के लोग और खास कर बेटियाँ प्रेरित होंगी और बेटियां सिर्फ घर ही चलाने में नही समाज को भी चलाने में अपना योगदान सुनिश्चित करेंगी।

पोक्सो अधिनियम के तहत प्रकरण पंजीकृत

सिद्धार्थनगर। समाज में फैलती अपराध की भावनाएं एवं कुत्सित विचारो से भरे अब घर के मुखिया से परिवार भी सुरक्षित नही है। जिस परिवार का मुखिया ही अपने लोगो का दुश्मन बन जाए उस परिवार की क्या हालत होगी यह विचारणीय योग्य है। अभी पिता- पुत्र की हत्या का मामला सुलझा नही था की कल नगर पंचायत उसका बाज़ार के मान्यवर काशी राम नगर वार्ड नंबर 01(घुघुलिया) में एक हरिजन परिवार में पिता के द्वारा अपने 2 साल बेटी के साथ किया दुष्कर्म का मामला

□पुलिस अधीक्षक ने मामले की गंभीरता को देखते हुए दिया त्वरित गिरफ्तारी का निर्देश

सामने आया। पुलिस के मुताबिक दिनांक 06-06-2020 को समय 22:10 बजे थाना उसका बाजार में एक महिला द्वारा एक लिखित प्रार्थना-पत्र दिया गया कि उसकी लड़की (उम्र 02 वर्ष) के साथ दुष्कर्म किया गया है। प्रार्थना-पत्र के आधार पर थाना उसका बाजार पर अंतर्गत धारा 376 व 5/6 पोक्सो एक्ट का अभियोग पंजीकृत हुआ। बताया जाता है पिता की दिमागी हालत ठीक नही है। पिता का यह कृत्य उसके दिमागी हालत को स्वयं बयान करता है। मामले की गंभीरता को देखते हुए विजय ढुल, पुलिस अधीक्षक सिद्धार्थनगर द्वारा दिनेश चन्द चौधरी, प्रभारी निरीक्षक, उसका बाजार को अभियुक्त की त्वरित गिरफ्तारी हेतु निर्देशित किया गया। थाना उसका बाजार पुलिस बल द्वारा अभियोग पंजीकृत होने के 30 मिनट के अन्दर अभियुक्त को गिरफ्तार कर रविवार दिनांक 07-06-2020 को जेल भेजा गया। इस जघन्य अपराध में पुलिस द्वारा बरती गयी तत्परता व की गई कार्यवाही से जनता के बीच पुलिस अधीक्षक एवं उसका बाजार पुलिस की भूरि-भूरि सराहना की गई। बच्ची की हालत अभी खतरे से बाहर बताई जा रही है।

सरकार ने लॉक डाउन में छूट देकर अनलॉक किया तो लोगो का हजूम बाजारों में उमड़ पड़ा सोमवार को रुद्रपुर बाजार का कुछ ऐसा ही नजारा देखने को मिला नगर के बाजार हों या चौराहे हर जगह सोशल डिस्टेन्स की जमकर धज्जियां उड़ाई गयी ऐसा लगता था लोगो के दिल मे कोरोना का कोई ख़ौफ़ नही पढ़े लिखे हों या अनपढ़ सब ने सामाजिक दूरी का कोई पालन नही किया सरकार करे भी तो क्या करे जब जनता ही सरकार के दिशा निर्देशों का पालन नही कर रही है सरकार हर किसी का हाथ पकड़ कर सामाजिक दूरी का पालन तो नही करा पाये गी ।अगर ऐसा ही चलता रहा तो स्थानीय प्रशासन के किये गये दिन रात के मेहनत पर पानी फिर जाए गा बस कुछ दिन लोग ऐसे ही सोशल डिस्टेन्स की धज्जिया उड़ाते रहे तो रुद्रपुर को कोरोना महामारी के चपेट में आने से कोई नही रोक सकता

बन्दियों से मुलाकात कल तक नहीं

गोरखपुर। करोना वायरस के प्रकोप से वचाव एवं रोकथाम के लिए लोक हित में जिला कारागार में निरूद्ध सभी बन्दियों से मुलाकात करने हेतु आने वाले उनके परिजनों, मित्रों आदि की मुलाकात पर गत सोमवार 8 जून से 15 जून 2020 तक रोक लगायी गयी है। लोक हित में 15 जून तक किसी भी बन्दी की मुलाकात उनके मित्रों परिजनों आदि से नही करायी जायेगी। उक्त जानकारी वरिष्ठ जेल अधीक्षक ने दी है।

ओ.टी.एस. योजना के लाभ की अवधि 30 तक

गोरखपुर।उ.प्र. अनुसूचित जाति वित्त एवं विकास निगम लि0 द्वारा संचालित समस्त योजनाओं के अन्तर्गत अधिदेय हो चुकी धनराशि ऋणी द्वारा किन्ही कारणों से जमा नहीं किया गया है, जिसके लिए शासन/ निगम द्वारा न्यू ओ.टी.एस. योजना निगम लागू की गई थी जिसमें मूलधन एवं देय अवधि का साधारण ब्याज सहित एकमुश्त समस्त धनराशि जमा करने पर चक्रवृद्धि ब्याज माफ कर बंद कर दिया जायेगा। उक्त योजना 31 मार्च तक लागू थी, परन्तु देश में कोविड-19 महामारी के कारण योजना का लाभ लाक्षित परिवार नहीं प्राप्त कर सका। पुनः उक्त योजना को 30 जून तक बढ़ाया गया है। उक्त जानकारी जिला प्रबंधक उ.प्र. अनुसूचित जाति वित्त एवं विकास निगम लि. ने दी है।

याद किये गये 19वीं सदी के आदिवासी जननायक बिरसा मुण्डा

गोरखपुर। अपने जीवन काल में ही एक महापुरुष का दर्जा प्राप्त करने वाले, 19वीं सदीं के प्रमुख आदिवासी जननायक अमर शहीद बिरसा मुंडा के "शहादत" को सलाम करते हुए आज शास्त्रीनगर मे एक विचार गोष्ठी का आयोजन (कोरोना के कारण उचित दूरी व मास्क का प्रयोग कर) कर नगरवासियों ने उनके शहादत दिवस को "शक्ति दिवस" के रूप में मनाते हुए कहा कि "भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में संघर्ष करने वाले युवा आदिवासी अमर शहीद लोकनायक बिरसा मुण्डा को आज भी बिहार, उड़ीसा, झारखण्ड, छत्तीसगढ़ और पश्चिम बंगाल के आदिवासी उन्हें भगवान की तरह पूजा करते है।

विचार गोष्ठी की अध्यक्षता सामाजिक कार्यकर्ता सुभाष चन्द्र अकेला एवं संचालन युवा समाजसेवी प्रदीप अग्रहरि ने किया। विचार गोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे सामाजिक कार्यकर्ता सुभाष चन्द्र अकेला ने अमर शहीद बिरसा मुण्डा के चित्र पर माल्यापर्ण करते हुए कहा कि "बिरसा मुंडा 19वीं सदी के एक प्रमुख आदिवासी जननायक थे। उनके नेतृत्व में **मुंडा आदिवासियों ने 19वीं सदी के आखिरी वर्षो में मुंडाओं के महान आन्दोलन उलगुलान को अंजाम दिया। बिरसा मुंडा का अपनों के प्रति समर्पण ऐसा रहा कि वह अपने अनुयायियों में लगभग भगवान के रूप में प्रतिष्ठित होते चले गये।** जब-जब स्वतंत्रता संग्राम की अमर शहीदों की बात चलेगी तब-तब फख्र के साथ देश व दुनियॉ के लोग उनका आदर के साथ नाम लेते रहेंगे।"

इसी क्रम में युवा समाजसेवी प्रदीप अग्रहरि व समाजसेवी सुरेश निषाद ने कहा कि झारखण्ड के अमर सपूत बिरसा मुंडा ने अपने 20 वर्ष की उम्र में ही वह कर दिखाया जिससे ब्रिटिश हुकुमत की रूह कॉप उठी। वह 03 फरवरी 1900 में ब्रिटिश हुकुमत द्वारा पकड़े गये और रहस्यमय स्थितियों में आज ही के दिन रांची जेल में उनका निधन हो गया। आज मुंडा समाज के लोग ही नहीं समूचे भारत का जन-जन उनको याद कर अपना श्रद्धासुमन अर्पित कर रहा है।

उपरोक्त अवसर पर विवेक अग्रहरि ने कहा कि "जब फिरंगियों ने उनके धर्म और मान मर्यादा का हरण करना चाहा तो उस क्रान्तिवीर ने युवा अवस्था में ही साम्राज्यवादियों के विरूद्ध क्रान्ति का बिगुल बजा दी और 25 वर्ष की आयु में ही देश के लिए हॅसते-हॅसते मृत्यु का आंलिगन कर लिया। उन्हें, उनके इलाके के लोग आज भी "धरती बाबा" के नाम से पुकारते और हृदय से पूजते हैं।

विचार गोष्ठी में मुख्य रूप से सुभाष चन्द्र अकेला, प्रदीप अग्रहरि, के.पी. गुप्ता, विनोद कुमार गुप्ता, डॉ. एस.पी.सिंह, रमाकान्त पाण्डेय, सुरेश निषाद, विवेक अग्रहरि, आशीष प्रिय अर्ग्रहरि, सूरज चैरसिया, अल्ताफ खान सहित तमाम गणमान्य लोग उपस्थित रहे ।

आशा के माध्यम से पंजीकृत गर्भवती को भी मिलेगा पीएमएमवीवाई का लाभ

सिद्धार्थनगर। कोरोना वायरस के संक्रमण को फैलने से रोकने के लिए पूरे देश में किये गए लॉकडाउन हो जाने के चलते बाद से परदेस से घर लौटी गर्भवती को प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना (पीएमएमवीवाई) का लाभ मिलेगा। पहली बार गर्भवती होने वाली महिला सीएचसी-पीएचसी पर आशा के जरिए पंजीकरण कराकर योजना का लाभ ले सकती हैं। इस योजना के तहत गर्भवती को तीन किस्तों में पोषण के लिए पांच हजार रुपये का लाभ दिया जाएगा।

सीएमओ डॉ. सीमा राय ने बताया कि गर्भवती के बेहतर पोषण के लिए प्रधानमंत्री ने 01 जनवरी 2017 को पीएमएमवीवाई योजना की शुरूआत की थी है। इसके तहत पहली बार गर्भवती होने वाली हर पंजीकृत महिला को तीन किस्तों में पांच हजार रुपये दिए जाते हैं। लॉकडाउन के बीच परदेस से घर लौटी गर्भवती को योजना का लाभ देने के लिए पहल की गई है। जिले के किसी भी कोने में मुंबई, दिल्ली, गुजरात व अन्य प्रदेशों से लौटी गर्भवती अपने गांव की नजदीकी आशा से संपर्क कर पंजीकरण कराकर योजना का लाभ उठा सकती हैं। स्वास्थ्य विभाग द्वारा लगातार इसका क्रियान्वयन किया जा रहा है। इसका लाभ ज्यादा से ज्यादा गर्भवती तक पहुंचाने की योजना है। उन्होंने बताया कि गांव की गर्भवती की जानकारी इकट्ठा कर पंजीकरण कराने के लिए आशाओं व एएनएम को निर्देशित किया गया है।

जिला कार्यक्रम सहायक प्रदीप भारती ने बताया कि जिले के सभी ब्लॉक क्षेत्र की आशाओं को दिशा-निर्देश देकर लक्ष्य को पूरा करने को कहा गया है। प्रवासी कामगार लोगों के घरों में परदेस से लौटी गर्भवती का पंजीकरण कराया जा रहा है। पहली बार गर्भवती होने वाली महिला को उचित खान-पान तथा जच्चा-बच्चा स्वस्थ रहें इसलिए योजना के तहत तीन किस्तों में पांच हजार रुपये खाते में दिया जाता है। इस तरह मिलता है। इस योजना का लाभ पाने के लिए गर्भवती को सबसे पहले स्वास्थ्य इकाई पर पंजीकरण कराना होगा।

पंजीकरण के साथ ही खाते में पहली किस्त के रूप में एक हजार रुपए दिए जाते हैं। दूसरी रा किस्त 180 दिन (6 महीने) के भीतर गर्भवती के टीकाकरण और प्रसव पूर्व जांच कराने पर दो हजार रुपये दिये जाते हैं है और तीसरी व अंतिम किस्त प्रसव होने के उपरांत बच्चे के टीकाकरण के बाद दी जाती है।

ऐसे करें आवेदन प्राथमिक व सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पर जाकर गर्भवती महिलाएं इस योजना के लिए पंजीकरण करा सकती हैं।

इस योजना के लिए पंजीकरण कराने में आशा, एएनएम व बीसीपीएम सहित बीपीएम आदि से मदद ले सकती हैं। आवेदन के लिए जरूरी दस्तावेजों के आधार कार्ड की फोटोकॉपी, बैंक या पोस्ट ऑफिस खाता की पासबुक जो आधार से लिंक हो,।

आधार न होने पर पहचान संबंधी अन्य विकल्प, पीएचसी या सरकारी अस्पताल से जारी स्वास्थ्य कार्ड, सरकारी विभाग, संस्थान से जारी पहचान पत्र आदि आवश्यक हैं है। 34,000 गर्भवती ले रहीं लाभ।

जिले में राज्य से आए लक्ष्य 44,520 के सापेक्ष अब तक ग्रामीण क्षेत्रों में 33,552 गर्भवती का पंजीकरण कर योजना का लाभ दिया जा रहा है। शेष बचे 10968 को जून तक पूरा करने के लिए जिम्मेदारी सौंपी गई है। शहरी क्षेत्र के 2772 के सापेक्ष 560 गर्भवती पंजीकृत हो सकी हैं।

इन्तेहा हो गई अंधविश्वास की

दरअसल, कोरोना से जुड़ा यह अन्धविश्वास भय और अशिक्षा का मेल है। आस्था के नाम पर उपजा महिलाओं का यह अजब-गजब व्यवहार जागरूकता की कमी और इस त्रासदी से जुड़ी भयावह स्थितियों को न समझ पाने का नतीजा है। जो वाकई अशिक्षा और जागरूकता की कमी की स्थितियों को सामने लाता है। अगर ऐसे ही होता रहा तो भविष्य में अंधविश्वास की ऐसी खबरें और उनसे जुड़ी अफवाहें अंधानुकरण और विवेकहीन सोच को बढ़ावा देने वाली साबित होंगी।

कोरोना वायरस से पूरी दुनिया लड़ रही है। कोरोना से छुटकारा पाने के लिए कई देश इसकी वैक्सीन बनाने पर रिसर्च कर रहे हैं लेकिन अभी तक कोरोना की वैक्सीन तैयार नहीं हो पाई हैं। ऐसे में कोरोना को लेकर तमाम तरह की अफवाहें, अंधविश्वास और भ्रम भी फैलाए जा रहे हैं।कोविड-19 महामारी का कारण बने कोरोनावायरस ने देश में धीरे-धीरे भगवान का रूप ले लिया है. अंधविश्वास में लोग इसे 'कोरोना माई' बुला रहे हैं. वायरस को ये नया नाम देने वाले, देवी मानकर देश के कई हिस्सों में इसकी पूजा कर रहे हैं. पूजा के दौरान 'कोरोना माई' को लौंग, लड्डू और फूल चढ़ाए जा रहे हैं. महिलाएं कोरोना को माई मानकर पूजा कर रहीं हैं। जिसकी पूजा करने से उसका प्रकोप खत्म हो जाएगा।

पूजा करते समय महिलाओं के इस झुण्ड ने ना तो मास्क पहना है, ना सोशल डिस्टेंसिंग की है। जो कोरोना को रोकने लिए सबसे जरूरी और कारगार कदम हैं। पूरब के गांवों से आए 'कोरोना माई' की पूजा के विडियो वायरल हो रहे हैं। गांव की स्त्रियों का शाम के वक्त सिवान (गांव की सीमा) में झाड़-झंखाड़ वाली किसी जगह पर छोटे-छोटे गड्ढे खोदकर उनकी तली को समतल करना, उसकी अच्छे से लिपाई करना, दिया जलाना और वहीं एक कतार में नौ लड्डू रखना। हर लड्डू से सटा एक-एक गुड़हल का फूल रखना और हर फूल के पास एक-एक सिंदूर का टीका लगाकर, हाथ जोड़कर मन ही मन घर-परिवार सुरक्षित रखने की विनती करना। फिर थाली, घंटी, घंटा बजाकर थोड़ी-थोड़ी बदली हुई पारंपरिक धुनों में 'बिदेसवा से आई' इस देवी का एक सामूहिक भजन और आयोजन खत्म होते ही गड्ढों को फूल-मिठाई समेत पाटकर पूजा स्थल से विदाई लेना, किसी उत्सव से कम नहीं लगता, जैसे हम सामान्य दिनों में मंदिरों और पूजा स्थलों में चाव से बिना किसी डर और संकोच के जाते हैं। अन्धविश्वास की इंतेहा बताने वाली ये घटना इस दौर में हो रही है, ये सोचकर मन सहम जाता हैं, जो स्वाभाविक है। मजे की बात यह कि ऐसा कहने वालों में वे संभ्रांत जन अधिक हैं जिन्होंने कुछ दिन पहले कोरोना के ही संदर्भ में इससे मिलते-जुलते कर्मकांड अपने शहरी आवासों में संपन्न किए हैं। देखने में ये भी आया है कि जैसे ही लॉक डाउन से छूट मिली है। धार्मिक संस्थाओं में भीड़ जुटना शुरू हो गई है। ग्रामीण इलाकों में महिलाएं मंदिरों में झुण्ड बनाकर जा रही है। ये कैसी आस्था है, कैसे अन्धविश्वास है? जब महामारी का एकदम डर आया तो इन सभी संस्थाओं के दरवाजे बंद थे। पुलिसवाले और स्वास्थ्य विभाग के कर्मचारी ही एकमात्र आस बचे थे, जो लोगों के जीवन को अपनी जान दांव पर लगाकर बचा रहे थे। और अब अन्धविश्वास में डूबे लोगों को पत्थरों में भगवान नज़र आ रहा है। जो इनको इस महामारी से बचाएगा। ये घटनाएं अज्ञानता और तथाकतित धार्मिक ठेकेदारों की घिनौनी करतूत है, जिनकी दुकानें लॉक डाउन में बंद हो गई है।

मेरा मानना है कि आज हम जिन लोगों को देवी-देवता बनाकर पूजा-अर्चना कर रहे है, वो अपने दौर के अच्छे और सामाजिक लोग थे, जिन्होंने समाज कि भलाई में अपनी ज़िंदगी लगा दी। उनमें दिव्यशक्ति और भगवान जैसा कुछ नहीं था। वो अपने समय के अच्छे लोग थे और अच्छे कार्यों के फलस्वरूप समाज में मान्यता प्राप्त थे। उद्धरण के लिए दशरथ पुत्र राम, ये भी तो एक आम मानव थे जो अपने सद्कर्मों से श्रीराम हो गए। वक्त के साथ ढोंगी लोगों ने उनके नाम पर संस्थाएं बनाकर लोगों को लूटना शुरू कर दिया और धर्म को व्यवसाय बना दिया। प्रचलित देवी-देवताओं को प्रसन्नचित करने के लिए अन्धविश्वास में अंधे होकर ऐसे वरदान प्राप्ति की पूजा-पाठ के बजाये हमें उन व्यक्तित्वों की अच्छी शिक्षा को अपनाने की जरूरत है।

कोरोना के बढ़ते आंकड़ों के बीच दूर दराज के गांवों में इस बीमारी को लेकर फैल रहे अंधविश्वास से जुड़े किस्से सामने आना चिंतनीय हैं। यह वाकई तकलीफदेह और इस बीमारी को विस्तार देने वाली बात है कि महिलाओं ने अंधविश्वास के चलते कोरोना वायरस की वैश्विक महामारी को देवी मान लिया है और इन महिलाओं का मानना है कि कोरोना माई की पूजा करने से इस महामारी से बचा जा सकता है।

सोशल डिस्टेंसिंग की पालना और मास्क लगाने जैसी जरूरी गाइडलाइंस की अनदेखी करते हुए महिलाएं समूह में एकत्रित होकर कोरोना वायरस को भगाने के लिए पूजा अर्चना कर रही हैं। इन महिलाओं का मानना है कि कोरोना बीमारी नहीं, देवी के क्रोध का कहर है जिसको पूजा करने पर कोरोना माई प्रसन्न होकर अपना क्रोध शांत कर लेंगी। जिससे यह महामारी खत्म हो जाएगी। आज जब ये बीमारी गांवों-कस्बों तक पहुंच चुकी है तब महिलाओं का जागरूक और सजग होने के बजाय अंधविश्वास की जद्दोजहद में फंसना बेहद खतरनाक है। कोरोना वायरस के संक्रमण को दैवीय आपदा मानकर पूज रही स्त्रियां यह भी नहीं समझ रहीं कि वे इस महामारी को और विस्तार देने का माध्यम बन रही हैं। नासमझी की हद ही है कि अंधविश्वास के फंदे में फंसी ग्रामीण इलाकों की महिलाएं खुद अपने और अपने परिवार के लिए खतरा मोल ले रही हैं। इस बीमारी की गंभीरता को समझने के बजाय इससे मुक्ति पाने का रास्ता ऐसे अन्धविश्वास में ढूंढ रही हैं। दरअसल, कोरोना से जुड़ा यह अन्धविश्वास भय और अशिक्षा का मेल है। आस्था के नाम पर उपजा महिलाओं का यह अजब-गजब व्यवहार जागरूकता की कमी और इस त्रासदी से जुड़ी भयावह स्थितियों को न समझ पाने का नतीजा है। जो वाकई अशिक्षा और जागरूकता की कमी की स्थितियों को सामने लाता है। अगर ऐसे ही होता रहा तो भविष्य में अंधविश्वास की ऐसी खबरें और उनसे जुड़ी अफवाहें अंधानुकरण और विवेकहीन सोच को बढ़ावा देने वाली साबित होंगी। आज जब भारत में संक्रमण के मामले दुनिया में सबसे ज्यादा होने के नजदीक है, ऐसे में यह अंधविश्वासी सोच इस लड़ाई को और मुश्किल बना देगी। इतना ही नहीं अंधविश्वास के चलते की जा रही पूजा-अर्चना की खबरें यूं ही आती रहीं तो यह अंधविश्वास भी व्यवसाय बन जाएगा। हमारे यहां पहले से भी कई बीमारियों के मामले में लोग झाड़-फूंक जैसे इलाज के तरीकों में उलझे हुए हैं। कोई हैरानी नहीं कारोबारी सोच के चलते इस फेहरिस्त में कोरोना जैसे भयावह संक्रमण को भी शामिल कर लिया जाए। आपदा के इस दौर में ऐसे अंधविश्वास हालतों को भयावह बना देंगे।

कोरोना महामारी से लड़ने के लिए आशंकाएं नहीं बल्कि जागरूकता और विश्वास जरूरी है। ऐसे में दैवीय आपदा मानकर कोरोना भगाने के अंधविश्वास के नाम पर हो रहे ऐसे जमावड़े कोरोना जैसी संक्रामक बीमारी को बढ़ावा देंगे। अफसोसनाक ही है कि महिलाएं आज भी अंधविश्वास के फेर में फंसी हैं। इस महामारी से हम विज्ञान का हाथ थामकर ही निकल सकते हैं। किसी भी महिला या पुरुष को अंधविश्वास में नहीं पड़ना चाहिए क्योंकि कोरोना एक वायरस है। इसको लेकर जो साइंटिफिक फैक्ट है उसके अनुसार सतर्कता बरतने की सलाह मानना बेहद जरूरी है। शासन-प्रशासन के निर्देश का पालन करके ही कोरोना से बचा जा सकता है, जरूरी है कि प्रशासनिक अमला भी ऐसे अन्धविश्वास को मानने और इससे जुड़ी अफवाहें फैलाने वालों के साथ सख्ती बरते। ताकि रूढ़ीवादी सोच ही नहीं इस बीमारी के विस्तार पाने पर भी लगाम लग सके।

प्रियंका सौरभ

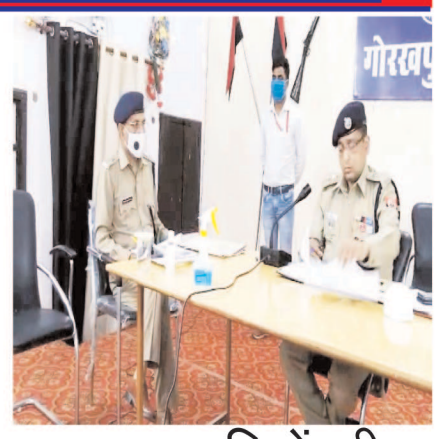

थानाप्रभारियों की अपराध समीक्षा बैठक सम्पन्न

गोरखपुर। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक डॉक्टर सुनील गुप्ता पुलिस लाइन मेस सभागार में उत्तरी व दक्षिणी क्षेत्र के थाना प्रभारियों के साथ अपराध समीक्षा । वही सभागार के बाहर मुख्य द्वार पर लगाए गए हाइपोक्लोराइट सॉल्यूशन स्टैंड से होकर गुजरना पड़ता था जिससे जूतों में कोरोना संक्रमण जैसे विषाणु हो तो वह नष्ट हो जाएं इसका पूरा ध्यान दिया गया ।

वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ने कहा कि सभी थाना प्रभारी अपने-अपने क्षेत्रों में अपराध एवं अपराधियों पर नियंत्रण रखे सभी की महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां हैं।

इसलिए अपने-अपने थाने के सभी चौकी प्रभारी के साथ बैठक कर उन्हें आवश्यक दिशा निर्देश दे किसी भी थाना व चौकी के अंतर्गत अपराध हर हालत में नही होनी चाहिए और थाने पर आए हुए सभी फरियादियों की समस्याओं का त्वरित गति से निस्तारण किया जाए छोटी-मोटी घटनाओं पर तत्काल मौके पर पहुंचकर अपराध को नियंत्रण करें जिससे फरियादी संतुष्ट रहे क्षेत्र में अपराध करने वाले अपराधियों की सूची बनाकर उनके ऊपर बराबर निगरानी बनाए रखें जिससे अपराध नियंत्रण रहे और किसी भी थाना क्षेत्र में अवैध तरीके से शराब बिक्री नहीं होनी चाहिए उस पर हर हालत में नियंत्रण रखना सभी सर्किल अफसर व थाना प्रभारी की जिम्मेदारी बनती है । इसके साथ ही महिला उत्पीड़न हर हालत में रुकना चाहिए वही

बैठक में पुलिस अधीक्षक नगर डॉ कौस्तुभ पुलिस अधीक्षक उत्तरी अरविंद कुमार पांडेय पुलिस अधीक्षक दक्षिणी विपुल कुमार श्रीवास्तव। सीओ कैम्पियरगंज दिनेश कुमार सिंह सीओ बांसगांव नितेश सिंह सीओ गोला श्यामदेव सीओ खजनी योगेंद्र नारायण सीओ चौरीचौरा श्रीमती रचना मिश्रा एसएसपी रीडर मौजूद रहे ।

आवेदन की अंतिम तिथि 15 व साक्षात्कार/चयन 19 को

गोरखपुर। उ0प्र0 अनुसूचित जाति वित्त एवं विकास निगम लि0 के माध्यम से अनुसूचित जाति के गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले बेरोजगार व्यक्तियों के लिए संचालित प0 दीनदयाल उपाध्याय स्वरोजगार योजना में रू 20000 परियोजना लागत से लेकर रू 1500000 तक की कृषि व गैर कृषि क्षेत्र की परियोजनाएं आच्छादित की जाती है। परियोजना लागत में अधिकतम रू 10000 हजार अनुदान एवं गैर कृषि क्षेत्र के परियोजनाओं में परियोजना लागत का 25 प्रतिशत मार्जिन मनी ऋण एवं शेष धनराशि राष्ट्रीयकृत बैंक/बड़ौदा यूपी बैंक के माध्यम से दिये जाने का प्राविधान है।

इसी प्रकार अनुसूचित जाति के गरीबी रेखा के नीचे निवास करने वाले व्यक्तियों के आर्थिक उत्थान हेतु विशेष केन्द्रीय सहायता की धनराशि से ''टेलरिंग शॉप योजना'' की नई योजना निगम द्वारा प्रारम्भ की जा रही है। योजना की अधिकतम परियोजना लागत रू 20000 है इसमें रू 10000 हजार अनुदान शेष धनराशि ब्याज मुक्त ऋण के रूप में विशेष केन्द्रीय सहायता से दी जायेगी।

ऊक्त जानकारी देते हुए जिला प्रबंधक उ0प्र0 अनुसूचित जाति वित्त एवं विकास निगम लि0 ने बताया है कि अनुसूचित जाति के इच्छुक/पात्र अभ्यर्थी अपना आवेदन पत्र सक्षम अधिकारी द्वारा प्रदत जाति आय प्रमाण पत्र एवं आधार कार्ड संलग्न कर 15 जून तक जिला प्रबंधक उ.प्र. अनुसूचित जाति वित्त एवं विकास निगम लि. गोरखपुर के कार्यालय में जमा/अन्य जानकारी प्राप्त कर सकते है। आवेदन पत्रों का साक्षात्कार/चयन 19 जून को अपरान्ह 12 बजे से जिला प्रबंधक उ0प्र0 अनुसूचित जाति वित्त एवं विकास निगम के कार्यालय में होगा।

'कोरोना संक्रमण के बचाव के लिए सभी को जागरूक रहना होगा'

गोरखपुर। ब्लाक स्तरीय आर.बी.एस.के. टीम के चिकित्सकों द्वारा तहसील सदर के ब्लाक पिपराइच के ग्राम माधोपुर में बाहर से आए हुए प्रवासी कामगारों/ श्रमिकों एवं ग्राम के अन्य ग्रामीणों का स्वास्थ्य परीक्षण कैम्प का निरीक्षण कर जिलाधिकारी ने लोगों को जागरूक किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि कोरोना संक्रमण के बचाव के लिए सभी जागरूक रहना होगा तथा समस्त ग्रामवासी बार बार अपने हाथों को धोते रहे तथा सोशल डिस्टेंकसंग व साफ सफाई का विशेष ध्यान रखें। उन्होंने कहा कि सरकार की योजनाओं का लाभ दिलाने के लिए इस प्रकार के कैम्पों का आयोजन किया जा रहा है जहां पर स्वास्थ्य परीक्षण के साथ साथ बाहर से आए श्रमिकों की रोजगार संबंधी समस्याओं को दूर किया जा रहा है। इस अवसर पर उप जिलाधिकारी सदर ने भी लोगों को कोरोना के संक्रमण से बचाव के लिए जागरूक करते हुए कहा कि सरकार की योजनाओं का लाभ उपलब्ध कराया जायेगा। इसी उद्देश्य से गत बुधवार को तहसील, जिला पूत्रि कार्यालय एवं स्वास्थ्य विभाग की टीम यहां पर उपस्थित रही जो स्वास्थ्य परीक्षण के साथ राजस्व एवं राशन कार्ड से संबंधित समस्याओं का निराकरण किया गया।

इस अवसर पर संबंधित अधिकारी गण उपस्थित रहे।

आदिवासी स्वाभिमान स्वतन्त्रता और संस्कृति को बचाने का संग्राम लड़ा बिरसा मुंडा ने

सिद्धार्थनगर। स्वतंत्रता के मुखर आवाज और आदिवासी महानायक बिरसा मुंडा को उनके पुण्यतिथि पर शिद्दत से याद किया गया। इस अवसर पर उपस्थित लोगों द्वारा उनके चित्र पर माल्यार्पण किया गया तथा वक्ताओं ने उनके जीवन आदर्श पर विस्तार से प्रकाश डाला गया। डुमरियागंज स्थित राजकीय कन्या इंटर कॉलेज के मैदान में अपने मार्गदर्शक की पुण्यतिथि मनाने के लिए तहसील क्षेत्र के आदिवासी धुरिया समाज के सैकडों लोग समय से उपस्थित हुए। इस दौरान सामाजिक दूरी का लोगों द्वारा पालन करते हुए कार्यक्रम की शुरुआत आदिवासी महानायक बिरसा मुंडा के चित्र पर पुष्प अर्पित कर किया गया। उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए समाज के तहसील अध्यक्ष जगदम्बा प्रसाद धुरिया ने कहा कि बिरसा मुंडा भारत के एक आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी और लोक नायक थे। अंग्रेजों के खिलाफ स्वतंत्रता संग्राम में उनकी ख्याति जग जाहिर है। सिर्फ २५ साल के जीवन में उन्होंने जो मुकाम हासिल किये उसके लिए यह देश सदैव उनका ऋणी रहेगा। कार्यक्रम में अपना विचार व्यक्त करते हुए सभासद उमाशंकर गोंड ने कहा कि १८९५ में बिरसा ने अंग्रेजों के खिलाफ पहली लडाई लडी।. ज़मींदारी प्रथा और राजस्व व्यवस्था के ख़िलाफ़ लड़ाई के साथ-साथ उन्होंने जल-जंगल और ज़मीन की लड़ाई छेड़ी। यह सिर्फ एक बग़ावत नहीं बल्कि आदिवासी स्वाभिमान स्वतन्त्रता और संस्कृति को बचाने का संग्राम था। अपने संबोधन में गणेश गोंड ने कहा कि १८९७ से १९०० के बीच आदिवासियों और अंग्रेजों के बीच कई लड़ाईयां हुईं और हर बार अंग्रेजी सरकार को मुंह की खानी पडी .इस अवसर पर कई वक्ताओं ने समाज का प्रशासन द्वारा किए जा रहे उत्पीड़न का मुद्दा भी उठाया गया। वक्ताओं ने कहा कि समाज अब जागरूक हो चुका है जाति प्रमाण पत्र को लेकर अब वृहद आंदोलन ही एक मात्र विकल्प हैं। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित लोगों नंद प्रसाद धुरिया शिवशंकर धुरिया, हरिशंकर धुरिया उमाशंकर धुरिया राम शंकर धुरिया, घनश्याम धुरिया राधे श्याम धुरिया संतोष गोंड नंदकिशोर धुरिया महेश धुरिया इंजी अनिल धुरिया सुनील रमेश कुमार रजत नीरज रिंकल सूरज आदि ने बिरसा मुण्डा द्वारा बताए हुए मार्ग और पदचिन्हों पर चलने का संकल्प लिया गया।

घूँघट की बगावत
डिजिटल प्रकाशन के सफलतापूर्वक दो वर्ष पूर्ण होने की ओर अग्रसर
गोरखपुर ही नहीं गोरखपुर से बाहर भी पढ़ा जाने वाला
गोरखपुर से प्रत्येक रविवार को प्रकाशित हिन्दी साप्ताहिक समाचार
www.ghoonghatkibagawat.com
E-mail : ghoonghatkibagawat@gmail. Com
Facebook: ghoonghatkibagawat
45, बादशाहबाग, जगन्नाथपुर, गोरखपुर।

बाल श्रम से कैसे बच पायेगा भविष्य

बाल अधिकारों और शिक्षा के महत्व के बारे में जागरूकता पैदा करना बहुत जरूरी है। बाल श्रम की कमियों के बारे में कम शिक्षित या अनपढ़ माता-पिता को शिक्षित करना इस संकट से लड़ने में सहायक हो सकता है। माता-पिता को बच्चों को स्कूल भेजने के लिए प्रेरित करना बाल श्रम के खतरे को नियंत्रण में ला सकता है।

संयुक्त राष्ट्र बाल श्रम को ऐसे काम के रूप में परिभाषित करता है, जो बच्चों को उनके बचपन, उनकी गरिमा और क्षमता से वंचित करता है, जो उनके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। बच्चों के स्कूली जीवन में हस्तक्षेप करता है। बाल श्रम आज दुनिया में एक खतरे के रूप में मौजूद है। आज के बच्चे कल के भविष्य हैं। देश की प्रगति और विकास उन पर निर्भर है। लेकिन बाल श्रम उनके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर चोट करता है। कार्य करने की स्थिति, और दुर्व्यवहार, समय से पहले उम्र बढ़ने, कुपोषण, अवसाद, नशीली दवाओं पर निर्भरता, शारीरिक और यौन हिंसा, आदि जैसी समस्याओं के कारण ये बच्चे समाज की मुख्य धारा से अलग हो जाते हैं। यह उनके अधिकारों का उल्लंघन है। यह उन्हें उनके सही अवसर से वंचित करता है जो अन्य सामाजिक समस्याओं को ट्रिगर कर सकता है।

विश्व बाल श्रम निषेध दिवस-बाल श्रम एक वैश्विक चुनौती है। बाल श्रम को लेकर अलग-अलग देशों ने कई क़दम उठाए हैं। बाल श्रम से निपटने के लिए हर साल 12 जून को 'विश्व बाल श्रम निषेध दिवस' मनाया जाता है। विश्व बाल श्रम निषेध दिवस की शुरुआत साल 2002 में 'इंटरनेशनल लेबर आर्गेनाईजेशन' द्वारा की गई थी। इस दिवस को मनाने का मक़सद बच्चों के अधिकारों की सुरक्षा की ज़रूरत को उजागर करना और बाल श्रम व अलग-अलग रूपों में बच्चों के मौलिक अधिकारों के उल्लंघनों को ख़त्म करना है। हर साल 12 जून को मनाए जाने वाले विश्व बाल श्रम निषेध दिवस के मौके पर संयुक्त राष्ट्र एक विषय तय करता है। इस मौके पर अलग - अलग राष्ट्रों के प्रतिनिधि, अधिकारी और बाल मज़दूरी पर लग़ाम लगाने वाले कई अंतराष्ट्रीय संगठन हिस्सा लेते हैं, जहां दुनिया भर में मौजूद बाल मज़दूरी की समस्या पर चर्चा होती है। दुनिया भर में ऐसे कई क्षेत्र हैं जहां बच्चों को मजदूर के रूप में काम पर लगाया जा रहा है। पहले बच्चे पूरी तरह से खेतों में काम करते थे, लेकिन अब वे गैर-कृषि नौकरियों में जा रहे हैं। कपड़ा उद्योग, ईंट भट्टे, गन्ना, तम्बाकू उद्योग आदि में अब बड़ी संख्या में बाल श्रमिकों को देखा जाता है। अशिक्षा के साथ गरीबी के कारण, माता-पिता अपने बच्चों को स्कूलों में दाखिला दिलवाने के बजाय काम करने के लिए मजबूर करते हैं। पारिवारिक आय की तलाश में, माता-पिता बाल श्रम को प्रोत्साहित करते हैं। अज्ञानता से, वे मानते हैं कि बच्चों को शिक्षित करने का अर्थ है धन का उपभोग करना और उन्हें काम करने का अर्थ है आय अर्जित करना। लेकिन वे ये नहीं समझते कि बाल श्रम काम नहीं होता बल्कि गरीबी को बढ़ाता है क्योंकि जो बच्चे काम के लिए शिक्षा का त्याग के लिए मजबूर होते हैं, वे जीवन भर कम वेतन वाली नौकरियों में बर्बाद होते हैं

आंकड़ों में बाल श्रम- दुनिया भर में बाल श्रम में शामिल 152 मिलियन बच्चों में से 73 मिलियन बच्चे खतरनाक काम करते हैं। खतरनाक श्रम में मैनुअल सफाई, निर्माण, कृषि, खदानों, कारखानों तथा फेरी वाला एवं घरेलू सहायक इत्यादि के रूप में काम करना शामिल है। इस तरह के श्रम बच्चों के स्वास्थ्य, सुरक्षा और नैतिक विकास को खतरे में डालते हैं। इतना ही नहीं, इसके कारण बच्चे सामान्य बचपन और उचित शिक्षा से भी वंचित रह जाते हैं। बाल श्रम के कारण दुनिया भर में 45 मिलियन लड़के और 28 मिलियन लड़कियाँ प्रभावित हैं। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में क़रीब 43 लाख से अधिक बच्चे बाल मज़दूरी करते हुए पाए गए। दुनिया भर के कुल बाल मज़दूरों में 12 प्रतिशत की हिस्सेदारी अकेले भारत की है। ग़ैरसरकारी आंकड़ों के मुताबिक़ भारत में-क़रीब-5 करोड़ बाल मज़दूर हैं।

बाल श्रम के पीछे कौन है ?

बाल श्रम केवल भारत तक ही सीमित नहीं है, यह एक वैश्विक घटना है। बाल श्रम में बच्चों का इस्तेमाल इसलिए किया जाता है, क्योंकि उनका आसानी से शोषण किया जा सकता है। बच्चे अपनी उम्र के अनुरूप कठिन काम जिन कारणों से करते हैं, उनमें आमतौर पर गरीबी पहला कारण है। इसके अलावा, जनसंख्या विस्फोट, सस्ता श्रम, उपलब्ध कानूनों का लागू नहीं होना, बच्चों को स्कूल भेजने के प्रति अनिच्छुक माता-पिता (वे अपने बच्चों को स्कूल की बजाय काम पर भेजने के इच्छुक होते हैं, ताकि परिवार की आय बढ़ सके) जैसे अन्य कारण भी हैं। बाल श्रम के लिए जिम्मेदार एक और प्रमुख समस्या है तस्करी। अनुमान के अनुसार, लगभग 1.2 मिलियन बच्चे यौन शोषण और बाल श्रम के लिए सालाना तस्करी होते हैं। भारत में बाल तस्करी की मात्रा अधिक है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के अनुसार, प्रत्येक आठ मिनट में एक बच्चा गायब हो जाता है। ये बच्चे मुख्य रूप से भीख मांगने, यौन शोषण और बाल श्रम के लिए तस्करी के शिकार हैं।

बाल श्रम और कानून-संवैधानिक व्यवस्था के अनुरूप भारत का संविधान मौलिक अधिकारोंऔर राज्य के नीति-निर्देशक सिद्धातों की विभिन्न धाराओं के माध्यम से कहता है- 14 साल के कम उम्र का कोई भी बच्चा किसी फैक्टरी या खदान में काम करने के लिये नियुक्त नहीं किया जाएगा और न ही किसी अन्य खतरनाक नियोजन में नियुक्त किया जाएगा। बाल श्रम (निषेध व नियमन) कानून 1986- 14 वर्ष से कम उम्र के बच्चों को किसी भी अवैध पेशे और 57 प्रक्रियाओं में, जिन्हें बच्चों के जीवन और स्वास्थ्य के लिये अहितकर माना गया है, नियोजन को निषिद्ध बनाता है। इन पेशों और प्रक्रियाओं का उल्लेख कानून की अनुसूची में है। फैक्टरी कानून 1948 के तहत 14 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के नियोजन को निषिद्ध करता है। 15 से 18 वर्ष तक के किशोर किसी फैक्टरी में तभी नियुक्त किये जा सकते हैं, जब उनके पास किसी अधिकृत चिकित्सक का फिटनेस प्रमाण पत्र हो। इस कानून में 14 से 18 वर्ष तक के बच्चों के लिये हर दिन साढ़े चार घंटे की कार्यावधि तय की गई है और उनके रात में काम करने पर प्रतिबंध लगाया गया है। भारत में बाल श्रम के खिलाफ कार्रवाई में महत्त्वपूर्ण न्यायिक हस्तक्षेप 1996 में उच्चतम न्यायालय के उस फैसले से आया, जिसमें संघीय और राज्य सरकारों को खतरनाक प्रक्रियाओं और पेशों में काम करने वाले बच्चों की पहचान करने, उन्हें काम से हटाने और गुणवत्तायुक्त शिक्षा प्रदान करने का निर्देश दिया गया था।

बाल श्रम से कैसे बच पायेगा भविष्य-बाल अधिकारों और शिक्षा के महत्व के बारे में जागरूकता पैदा करना बहुत जरूरी है। बाल श्रम की कमियों के बारे में कम शिक्षित या अनपढ़ माता-पिता को शिक्षित करना इस संकट से लड़ने में सहायक हो सकता है। माता-पिता को बच्चों को स्कूल भेजने के लिए प्रेरित करना बाल श्रम के खतरे को नियंत्रण में ला सकता है। सामाजिक कार्यकर्ताओं, मीडिया व्यक्तियों, नागरिक समाजों, गैर-सरकारी संगठनों, वास्तव में, सभी क्षेत्रों के लोगों को इस मुद्दे के खिलाफ एकजुट होने की जरूरत है ताकि हमारे बच्चों का समृद्ध जीवन हो सके। आइए हम इस विश्व दिवस पर बाल श्रम (12 जून) के खिलाफ बाल अधिकारों के संरक्षण के लिए व्यक्तिगत स्तर पर प्रयास करें।

डॉ.सत्यवान सौरभ

सोशल मीडिया और युवा साहित्य लेखन

आज का साहित्य और उसका चिंतन नई सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों के कारण पहले के साहित्य और उसके चिंतन से कई मायनों में बदल गया है। चिंतन की जगह सूचनाएं इनके औज़ार हैं। नई पीढ़ी बदले हुए सामाजिक समूहों को आधार बनाकर नया साहित्य रच रही है जो तकनीक के बदले नए आयामों को शामिल करते हुए भाषा और नई शब्दावलियों की चमक लिए नए तेवर के साथ सामने आता है। आज संचार के माध्यमों के विकास के बाद पाठकों की साहित्य पर निर्भरता घटी है। परन्तु यह भी सत्य है कि अच्छी रचनाएं आज भी लिखी और पढ़ी जा रही हैं। साहित्य रचना संवेदनाओं और आतंरिक उद्वेगों की निर्झर बहती निर्मल नदी की यात्रा के समान है। जब तक नदी अपनी स्वछंद गति से रास्ते में आये हुए अवयवों को सिंचित करके बहती हुई मुहाने की तरफ बढ़ती रहती है तब तक प्रकृति अपने सौम्य और सुभाषिनी आकार में प्रतीत होती रहती है। इसकी स्थावरता इसके विनाश का उद्घोष करता है एवं यह निर्देशित करता है कि इसकी सफाई समय रहते की जाए। साहित्य भी अगर युवा पीढ़ी को अनदेखा कर देगा तो इसके विकास के रास्ते लगातार अवरुद्ध होते जाएँगे। आज पूरा विश्व भारत की तरफ मुँह बाए खड़ा है ताकि भारत के डेमोग्राफिक डिविडेंड का लाभ उठा सके और इसका लाभ केवल विज्ञान, तकनीक, कृषि,व्यापार,रोज़गार,अनुसंधान क्षेत्र के लिए ही सीमित नहीं है, बल्कि साहित्य के ढेरों विधाएँ मसलन गीत, संगीत, नाटक ,नृत्य ,पुस्तक लेखन के तौर पे भी देखा जा रहा है। युवा लेखन में इतना ओजश्व होना चाहिए कि पुरातन की जमी काई और वर्तमान की गंदगी को साफ़ कर सके। दो दशक पहले पढ़ने से ज्यादा सुगम्य साधन कोई और नहीं था। चंदामामा, नंदन, चम्पक, बालहंस, नन्हें सम्राट , कॉमिक्स हमारे ज्ञानवर्धन और मनोरंजन तथा अतिरेक आनंद के साधन थे , किन्तु अब हम बिना पठन-पाठन के ही आनंदित और आलोकित होना चाहते हैं। जितने भी बड़े रचनाकार हुए हैं उनमें से अधिकतर की साहित्य रुचि घर के बड़े-बुजुर्ग के कारण ही पैदा हुई। परिवार के बड़े-बुजुर्ग के सान्निध्य में किस्से-कहानियाँ सुनना हमारे बाल्य काल के अवचेतन मन पर बहुत ही गहरा छाप छोड़ती थी। उससे उनमें एक साहित्यिक संस्कार पैदा होता था और बहुत हद तक वो एक संवेदनशील मनुष्य बनते थे। बचपन के साहित्यिक संस्कार के कारण ही पहले विभिन्न पेशों से जुड़े लोगों का साहित्य से ताउम्र रिश्ता बना रहता था। तकनीकी विकास ने पाठकों से उनके पढ़ने की आदत को बुरी तरह प्रवाभित किया है। ज्ञान को सूचना में अवमूल्यित कर देने का सबसे विहंगम असर किताबों पर पड़ा है। किताबों की तुलना में ये सूचनाएं दूसरे तकनीकी माध्यमों से कहीं भी और कभी भी प्राप्त की जा सकती हैं. साहित्यिक किताबों को केवक ज्ञानोपार्जन से जोड़ कर नहीं देखा जा सकता है. उनके प्रति अनुराग के पीछे एक खास तरह की अस्तित्वगत बाध्यता और मानसिक जरूरत भी होती है। इन माध्यमों के असीमित विस्तार और उपस्थिति ने किताबों के साथ हमारी दोस्ती को ख़त्म नहीं की, तो बहुत कमजोर तो अवश्य ही कर दिया है।

दो दशक पहले पढ़ने से ज्यादा सुगम्य साधन कोई और नहीं था। चंदामामा, नंदन, चम्पक, बालहंस, नन्हें सम्राट , कॉमिक्स हमारे ज्ञानवर्धन और मनोरंजन तथा अतिरेक आनंद के साधन थे, किन्तु अब हम बिना पठन-पाठन के ही आनंदित और आलोकित होना चाहते हैं।

सोशल मीडिया की उपयोगिता मात्रा इस तथ्य से शंका के घेरे में नहीं लाया जा सकता कि इसने परम्परागत साहित्य के साधनों जैसे कि किताबों को विकृत किया है. सोशल मीडिया ने अपने बिना भेद-भाव के स्वरुप के चलते हर उस लेखक, चिंतक एवं विचारक को एक नया आयाम दिया है जिसके माध्यम से आज वो हर मुद्दे पर प्रखर रूप से लिख रहे हैं एवं इसी क्रम में एक ऐसे समाज की रचना भी कर रहे है जहाँ आदमी पहले से ज्यादा सशक्त हुआ है एवं सरकारें उत्तरदायी। हालाँकि उत्तर-सत्य काल में जहाँ फेक न्यूज़ जैसी सुरसा ने साहित्य की संभावनाओं और सामर्थ्य पर प्रश्न उठया है लेकिन दूसरी तरफ इसने कई गुमनाम रचनाकारों को जुबां और पहचान दोनों ही दी है। साहित्य भाषा अकादमी सन 2011 से शुरू की गई युवा साहित्य पुरूस्कार इसी बात का द्योतक है की युवा साहित्यकारों की लेखनी को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता है । सोशल मिडिया के सहयोग से आज लेखक उन पाठकों तक पहुँच रहे हैं जहाँ कुछ समय पहले तक यह एक सपना लगता था। प्रकाशन कंपनियों की एकक्षत्रराज की वजह से कई अच्छे लेखकों को भी उभरने के मौका नहीं मिलता था। सोशल मीडिया की वजह से पाठकों की रचनाओं को ऑन लाइन पढ़कर एवं त्वरित प्रत्युत्तर की वजह से दूसरे लोगों को भी लिखने की प्रेरणा मिल रही है एवं वो साहित्य के करीब आ रहे हैं. युवा लेखक बड़ी बेबाकी से सामाजिक परिवर्तनों जैसे की ट्रांसजेंडर की समस्या , विकलांगता की बाधाओं पर बेहतरीन रचनाएँ पाठकों के समक्ष इसलिए भी ला पा रहे हैं क्योंकि सोशल मीडिया की वजह से उनके ज्ञान का क्षितिज बढ़ा है और वो बेहतर सोच पा रहे हैं। 2017 में प्रकाशित मृणाल पांडेय का उपन्यास डार्क हॉर्स-एक अनकही दास्ताँ जो की दिल्ली में सिविल सेवा में जुटे विद्यार्थियों के बाइबिल के तौर पर उभरी है तो इस में बहुत बड़ा हाथ सोशल मिडिया का भी है. फेसबुक, ट्विट्टर ,व्हाट्सएप्प,स्नैपचैट के माध्यम से पाठको की रूचि जानेकर और फिर बाज़ार की नब्ज़ पकड़ कर लिखने से साहित्यकार को घाटा एवं विस्थापन का दोहरा वार आज नहीं झेलना पड़ता है। लेखकों की सामग्री की उपलब्धता भी लेखकों के सफल होने की बहुत बड़ी वजह रही है। आज युवा लेखक अमेज़न , स्नैपडील ,फ्लिपकार्ट के जरिये अपनी किताब का प्रचार एवं बिक्री नियंत्रित कर सकते हैं एवं त्वरित राय से किताब की कमियों को सुधार भी सकते हैं। इसी दिशा में स्पिक मकय,रेख़्ता,साहित्य आजतक, माइक्रो ब्लॉगिंग ,कई अख़बारों के द्वारा संचालित इ-लेखन जैसे की अमर उजाला का काव्य डेस्क सशक्त माध्यम बनकर कर उभरे हैं। यह हमारे लिए गर्व की बात है कि हम दुनिया के महत्वपूर्ण देशों की कतार में सोशल मीडिया इस्तेमाल में तीसरे स्थान पर हैं, ये एक बड़ी उपलब्धि ही मानी जाएगी। हमारा युवा वर्ग आज सक्षम और तकनीकी के विकास ने उन्हें अपने पैरों पर खड़ा कर दिया है. किसी भी भौतिक आविष्कार की उपयोगिता उसके उपयोग करने वाले पर निर्भर करती है। अगर युवा साहित्यकार अच्छी रचनाएं गढ़ कर सोशल मिडिया के जरिये ही अपना मुकाम बना रहे हैं तो यह बहुत ही लाभकारी परिवर्तन है, लेकिन अगर सोशल मिडिया का इस्तेमाल साहित्यिक वस्तु के जरिए समाज की नब्ज़ काटने के लिए किया जा रहा है तो यह एक बेहद खतरनाक संकेत है।सोशल मीडिया आज जीवन का अभिन्न अंग बन गया है और इस बात को ठुकराया नहीं जा सकता है। अतः निजी एवं सामाजिक लाभ हेतु युवा लेखकों की अपनी जिम्मेदारी लेते हुए सृजनकारी साहित्य लेखन हेतु कदम बढ़ाना चाहिए और समाज को साहित्य के नए चेहरे जो कि सोशल मीडिया की वनिस्पत सामने आया है, उससे रूबरू भी कराना चाहिए।

सलिल सरोज

कभी भी परेशान कर सकता है गठिया (आर्थराइटिस)

आज की बदलती जीवन शैली में स्वास्थ्यगत परेशानियां आम हो चली हैं। पहले जो बीमारियां थीं बुजुर्गों का अपनी चपेट में ले लेती थीं। वह अब युवाओं को अपना शिकार बना रही हैं आर्थराइटिस (गठिया) भी इसी तरह की एक बीमारी है जो लापरवाह दिनचर्या, खान-पान व शारीरिक असक्रियता का परिणा है। यों तो इस बीमारी का सर्वाधिक असर कमर व कूल्हों, घुटनां कभी-कभी हाथों व कंधे को भी प्रभावित करता दिखाई देता है। जोड़ों का दर्द और शारीरिक अकड़न इसी बीमारी का सामान्य लक्षण है। अगर इसका इलाज जल्द न कराया गया तो मरीजो को खासी परेशानी में डाल देता है।

रक्तदान कीजिए

सहयोग भाव से सभी राहें आसान कीजिए
सांस देके औरों को खुद को महान कीजिए
नाम रक्तदान है पर, दान ये जीवन का है
अनमोल है ये महादान, रक्तदान कीजिए
आगे खुद से आके हम सम्मान वक्त का करें
चिंता हमारी ऐसी जो भगवान भक्त का करें
आभारी मनुजता हमेशा रहेगी रक्तवीरों की
इंसानियत का नाम लेके दान रक्त का करें
इस ओर हर कदम उठे, ये आह्वान कीजिए
अनमोल है ये महादान, रक्तदान कीजिए
इस कदम से किसी की , गोद रहेगी भरी
सिंदूर किसी का बचेगा, नाम लेगी हर घड़ी
खुशियां एक प्रयास से , कई घरों में आएगी
निकलेगी सबके दिल से , दुआओं की झड़ी
जो याद जग रखे सदा , ऐसा निशान कीजिए
अनमोल है ये महादान, रक्तदान कीजिए

विक्रम कुमार.
मनोरा, वैशाली

एक हाथ स्वच्छता की ओर.....

तुम अगर,
एक हाथ.....
स्वच्छता की
ओर बढ़ाओंगे।
इस धरा का,
कोप हर के,
स्वर्ग सम कर
जाओंगे।
तुम अगर, एक हाथ.....
अपने लिए ,
क्यों.....?
गंदगी का ,
अथाह सागर भर रहा।
मौत और बीमारी को,
जीवन में अंगीकृत कर
रहा।
देख जीवन दायिनी,
धरा की पीड़ा
हर।
इस पर,
फैला कर
कचरा।
इसे गंदा न कर।
तुम अगर....
इसे साफ रख।
इसकी सुंदरता
को बढ़ाओंगे।
है यह अटल
दावा मेरा।
मनुज तुम भी,
देवता कहलाओंगे।
देवता कहलाओंगे।।

प्रीति शर्मा 'असीम'
नालागढ़ हिमाचल प्रदेश

अनसुलझे प्रश्न

अनसुलझे प्रश्नों में उलझकर,
इसको उसकी जगह खड़े होकर,
सोचना बड़ा ही अच्छा है ।
शायद! हृदय भी तुम्हारा,
बहुत अच्छा है ।
लेकिन अपने ही आप में,
अपना विश्वास ढूंढ लेना,
सबसे अच्छा है।
अनसुलझे रिश्तों में उलझकर,
रेशम से धागे सुलझा लेना,
बड़ा ही अच्छा है।
शायद! इरादा भी तुम्हारा,
बड़ा ही पक्का है।
किन्तु आत्म चेतना
विकसित कर, नैतिकता
और औचित्य को पा लेना,
सबसे अच्छा है।

ज्योति अग्निहोत्री 'नित्या',
इटावा, उत्तर प्रदेश।

क्यों करते हो

जिंदगी जिंदाबाद है फिर मरने की बात क्यों करते हो
ऐ! कायरों की तरह आसूं की बरसात क्यों करते हो!
चंद बाजी हार जाने से ही तुम इतने गमज़दा हो बैठे
मैं पूछता हूँ खुद के पैरों पर ही आघात क्यों करते हो!
हारी शतरंज बाजी भी जीत सकते हो तुम हौसले से
शह को जवाब देना सीखो खुद को मात क्यों करते हो!
कद के दायरे से निकल कर छुओ गगन की ऊंचाई को
गमले में उगे बोनसाई सी अपनी औकात क्यों करते हो!
दुनिया भर के लोग केवल अपने में मगन हैं ऐ निर्मल
पत्थर दिल लोगों से बयां,अपने जज्बात क्यों करते हो!

आशीष तिवारी निर्मल
लालगांव जिला रीवा. मध्यप्रदेश

बन्दर मामा जब गांव में आया

बन्दर मामा जब गांव में आया,
तब बच्चों ने उसको देखा ।
सब बच्चों में हैं खुशी की लहर,
सब के मन को भाया मामा।।
बन्दर मामा जब गांव में आया.....
उसके पीछे सब बच्चे भागे,
शोर मचाते दौड़े भागे ।
बन्दर मामा तब घबराया,
उसको एक योजना सूची।।
बन्दर मामा जब गांव में आया.....
झट से वह बरगद पर चढ़ गया,
बरगद का पेड़ है ऊंचा भाई ।
लाल गाल है उस बन्दर के भाई,
पूंछ तो उसकी लंबी भाई।।
बन्दर मामा जब गांव में आया.....
रामू घर से रोटी लाया,
फेंककर रोटी बंदर को खिलाई।
वह तो सबको घुड़की देता,
बच्चों उसको रहे खूब चिढ़ाई ।।
बन्दर मामा जब गांव में आया.....

अवधेश कुमार निषाद मझवार
फतेहाबाद आगरा (उ0प्र0)

हम बेबस हैं, कुछ कर नहीं सकते

उम्फान और निसर्ग दोनों आए और आकर चले गए। अब हिसाब लगाया जा रहा है कि उम्फान ने ओडिशा और निसर्ग ने मुम्बई को छोड़ दिया। कोई तूफान यूं ही नहीं गुज़र जाता, बहुत कुछ समझा जाता है, अनहोनी का मंज़र दिखा जाता है। साथ ही साथ एक टैग भी लगा देता है कि फिर मिलंगे।

वैज्ञानिक शोधों एवं खोजो ने इतना संभव कर दिखाया है कि हम ऐसी आपदाओं की आहट और संदेशों को पहचान सके और आत्मरक्षा के हर संभव प्रयास कर सकें। अपनी जान को बचा लें माल का क्या जो होना होगा वह होकर ही रहेगा। इससे अधिक हमारा विज्ञान कुछ भी नहीं

अभी हम यह तलाश रहे हैं कि कोरोना वायरस किस प्राणी के माध्यम से हम तक पहुंचा। जब तक हम किसी निष्कर्ष तक पहुंचेंगे तब तक प्रकृति ना जाने कितने और वायरसों को हमारे सामने खड़ा कर देगी।

कर सकता क्योंकि विज्ञान का रिश्ता ज्ञान से है और ज्ञान नाना प्रकार की शंकाओं का समाधान करता है। विज्ञान न तो लॉक डाउन करेगा और ना ही क्वारंटाइन। विज्ञान यह भी बताता है कि सारा खेल जलवायु परिवर्तन का है और जब जल और वायु दोनों ही निशाने पर हों तो जीवन का सामान्य व्यापार चता रहे ऐसा सम्भव है क्या? वैज्ञानिक दृष्टिकोणों से ऐसा संभव तो नहीं है-क्योंकि जब हम, जल और वायु में जरा सा भी परिवर्तन होगा तो पर्यावरण भी परिवर्तित होगा क्योंकि इन सबकी एक श्रृंख्ला है, जो आपस में एक दूसरे से जुड़ी हुई है।

सदैव सन्तुलित चक्र का हिस्सा रही है। ठीक उसी प्रकार से जैसे कि गणितीय प्रमेय। जब कार्बन की मात्रा बढ़ेगी तो पर्यावरण के भीतर उथल पुथल होगी गर्मी बढ़ेगी, बर्फ पिघलेगी और समुद्र का जलस्तर बढ़ेगा। जिसका प्रभाव धरती पर पड़ेगा। नाना प्रकार की बीमारियों, आपदा और विषाणु जलवायु परिवर्तन का ही परिणाम है।

अभी हम यह तलाश रहे हैं कि कोरोना वायरस किस प्राणी के माध्यम से हम तक पहुंचा। जब तक हम किसी निष्कर्ष तक पहुंचेंगे तब तक प्रकृति ना जाने कितने और वायरसों को हमारे सामने खड़ा कर देगी। कार्बन के असन्तुलन पर बैठा यह उपक्रम न आज का है और ना ही कल खत्म हो पायेगा और हमारे स्वर्णिम भविष्य का महल कार्बन की पीठ पर सवार है। कार्बन को रोका नहीं जा सकता क्योंकि यही हमारे विकास का आधार है।

लॉकडाउन से लॉकओपन के दरम्यान आने वाले अनेक भूकम्पीय झटकों ने भी हमें यही समझाने की कोशिश की है कि नीचे काफी कोहराम मचा हुआ है कुछ भी घटित हो सकता है हम बेबस हैं, कुछ कर नहीं सकते।

जच्चा-बच्चा केंद्र जीर्णोद्धार की प्रतीक्षा

देवरिया। सामुदायिक स्वास्थ केंद्र रुद्रपुर केअन्तर्गत ग्राम सतुआभार का जच्चा-बच्चा केंद्र ध्वस्त हो चुका है। ऐसे में ग्रामीण अंचलों के माता और शिशुओ की देखभाल करने तथा टीकाकरण आदि कार्य कराने की व्यवस्था लचर व खुद बीमार है। खंडहर में तब्दील शिशु कल्याण केंद्र (जच्चा- बच्चा केंद्र)वर्षों से विभागीय उपेछा का शिकार बना हुआ है। ए एन एम सेंटर्स में गर्भधारण के बाद से ही प्रसव तक की सभी सुविधाए उपलब्ध कराना है।यह केंद्र कई वर्षों से बदहाल अवस्था व खंडहर में तब्दील हो चुका है।ऐसे में इन केंद्रों से मिलने वाली सुविधाएं भी गर्भवती व शिशुओं को नहीं मिलती है। गर्भवती महिलाओं व बच्चों का टीकाकरण यहां न के बराबर ही होता है। यहां ड्यूटी बजाने वाली ए एन एम यहां ना आकर कागजों में ही आकर अपनी ड्यूटी पूरी कर लेती है जिससे यहां इलाके में टीकाकरण हमेशा बाधित रहता है। जिससे जच्चा बच्चा को टीकाकरण सुरक्षा प्राप्त ही नहीं हो पा रहा है।प्रसव कराने व जच्चा बच्चा के परीक्षण व उपचार के लिए रुद्रपुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र जाना पड़ता है।इस क्षेत्र के सभी गर्भवती महिलाओं को काफ़ी परेशानी उठानी पड रही है। ग्राम सतुआभार के जच्चा बच्चा केंद्र से पूर्व में सतुआभार,पचमा, लालपुर, गाजीपुर भैसही, बौरडीह, महेशपुर,, कुरैती आदि के हजारों लोग लाभान्वित होते थे।

डाक्टरों की लापरवाही को लेकर धरने पर उतरी अभाविप

सिद्धार्थनगर। जिले में जिला अस्पताल में इलाज के अभाव में रामू शर्मा के मौत का मामला अब तूल पकड़ता जा रहा है। भाजपा के अनुसांगिक संगठन अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के लोगों इसके किलाफ मोर्चा खोल दिया है।अभाविप के लोग आज कलक्ट्रेट परिसर में धरने पर बैठ गये। और रामू शर्मा के इंसान की मांग करने लगे। स्वास्थ्य मंत्री जय प्रताप सिंह के गृह जनपद में डॉक्टरों की इस ने लापरवाही स्वास्थ्य विभाग की पोल खोल कर रख दिया है।

आप को बताते चलें कि तीन दिन पहले जिला अस्पताल का एक वीडियो वायरल हुआ था। जिसमें रामू शर्मा को इलाज नही मिलने से मौत हो गई थी। वह लगभग तीन घंटे अस्पताल बाहर लगभग तीन घंटे तड़पता रहा। बाद में जिला अस्पताल के डॉक्टरों ने बाद में गोरखपुर रेफर किया था। रास्ते मे उसकी मौत हो गई थी। जिसका वीडियो काफी वायरल हुआ था। जिसको लेकर काफी हंगामा भी हुआ था जिसका जांच तत्काल शुरू स्वास्थ्य विभाग ने किया । लेकिन अभी तक इसकी जांच रिपोर्ट नही आ सकी। पूरी तरह से इस मामले में विभाग लिपापोती करने में जुट गया। अभाविप के राजन द्विवेदी ने उस समय अस्पताल पहुंच कर इलाज कराने का प्रयास किया था। लेकिन डॉक्टरों की हठ रविये की वह रामू शर्मा का इलाज नही करवा पाए। बस इसी बात को लेकर इन लोगो ने विरोध प्रदर्शन शुरू कर दिया। इनके प्रदर्शन के बाद प्रशासन के हाथ पैर फूलने लगा।

प्रशासन इनको मनाने में जुट गया। इनका कहना है कि जब हम रामू शर्मा को इंसाफ दिलाकर रहेंगे। जब तक दोषियों के खिलाफ कार्यवाही नही हो जाती तब तक हम लोग प्रदर्शन करते रहेंगे।

कहाँ गई इंसानियत...?

कहाँ गयी इंसानियत..??
जब लोग अपने माता- पिता को खुद व्रध आश्रम छोड़ चले आते हैं और दूसरों को सही और गलत का पाठ पढ़ाते हैं।
कहाँ गयी इंसानियत..??
जब एक आज़ाद देश में रहने के बाद भी एक लड़की के रहन सहन और पहनाव पे रोक लगायी जाती है और उसको हर चीज़ के लिए दोष दिया जाता है, और जो दोषी है वो सरेआम बिना डर के हर गली में घूमते हैं।
कहाँ गयी इंसानियत..??
जब किसी सड़क पर कोई जानवर घायल स्थिति में हो तो उसका इलाज तो दूर की बात है उसको नजरअंदाज़ करके उसी सड़क से निकल जाते हैं, ये तो फ़िर भी एक बेज़ुबान जानवर था, यहाँ तो लोग अच्छे भले इंसान की भी कदर नहीं करते।।
कहाँ गयी इंसानियत..??
जहाँ एक चिकित्सक का काम होता है अपने मरीज़ों की अच्छे से देख भाल करना,पर यहाँ तो चिकित्सक भी बिना पैसों और पहले से इजाज़त लिए बिना मरीज़ से मिलना तो दूर उनको देखना भी पसंद नहीं करते हैं।
कहाँ गयी इंसानियत..??
वैसे तो एक गुरु का काम होता है हर किसीको एक अच्छी शिक्षा प्रदान करना, पर यहाँ तो एक अच्छी शिक्षा के नाम पे लोग व्यवसाय करते हैं और बिना पैसों के तो यहाँ एक गरीब बच्चे को विध्यालय में दाख़िला तक नहीं मिलता।।
आखरि कहाँ गयी इंसानियत..?????

निहारिका चौधरी
खटीमा उत्तराखंड

साहित्य जगत में छोटी सी उम्र में बनाई पहचान शुभांगी ने

भवानीमंडी। मात्र 12 वर्ष की छोटी सी उम्र में साहित्य जगत में पहचान बनाने वाली बाल कवयित्री शुभांगी शर्मा को अखिल भारतीय साहित्य परिषद भवानीमंडी (झालावाड़) राजस्थान द्वारा ऑनलाइन कवि सम्मेलन में श्रेष्ठ मंच संचालन हेतु सम्मानित किया। शुभांगी को विश्व पर्यावरण दिवस पर शानदार काव्य पाठ करने हेतु पर्यावरणरक्षक सम्मान से भी सम्मानित किया है। इससे पूर्व भी परिषद द्वारा बाल कवयित्री शुभांगी शर्मा को काव्यश्री सम्मान मिला है। शुभांगी का जन्म भवानीमंडी में 12 जनवरी 2008

शुभांगी को विश्व पर्यावरण दिवस पर शानदार काव्य पाठ करने हेतु पर्यावरण रक्षक सम्मान से भी सम्मानित किया है। इससे पूर्व भी परिषद द्वारा बाल कवयित्री शुभांगी शर्मा को काव्यश्री सम्मान मिला है।

को स्वामी विवेकानन्द जयंती को पुरोहित ब्राह्मण कुल में डॉ. राजेश कुमार शर्मा पुरोहित के घर हुआ गीता के श्लोक ये प्रतिदिन अर्थ सहित पढ़ती है। इनके पिताजी देश के ख्यातिनाम अंतराष्ट्रीय रचनाकार व देश के सुप्रसिद्ध कवि साहित्यकार है। शुभांगी की मधुर आवाज से सभी दांतों तले अंगुली दबा लेते हैं । ये बथेल सेकेंडरी स्कूल भवानीमंडी में अध्ययनरत है कक्षा आठवीं की छात्रा है। शुभांगी को पेंटिंग डांसिंग का भी शौक है। ग्वालियर व बिहार से इन्हें कोरोना से बचाव की पेंटिंग हेतु विशेष सम्मान से सम्मानित किया जा चुका है। भारतीय कलाकार संघ ग्वालियर व कौशल्या सेवा फाउंडेशन द्वारा इन्हें कोरोना से बचाव हेतु जन जागरूकता हेतु सम्मानित किया है।

इत्रः खुशबूओं का राजा

' मैं इत्र से महकूँ,
ये आरजू नहीं है,
तमन्ना है
मेरे किरदार से
खुशबू आये। '

कहा जाता है कि भोजन संबंधी मूलभूत आवश्यकता के बाद सौंदर्य है जो हमेशा से इंसान को मोहित करता रहा है इसलिए इस खूबसूरती को बढाने के लिए तमाम तरीकों के प्रयोग किये गये। कल्पना कीजिए कि आपके वर्कस्थल पर टायर या पालीथीन जलाया जा रहा हो तो आपके मनः स्थिति क्या होगी? आप सारा काम छोड़कर भागने का बहाना तलाशेंगे। एक शोध में तो यह निष्कर्ष निकला था कि किसी कार्यालय के काम को बर्बाद करना है तो उसके बाहर दुर्गंध फैलाने की व्यवस्था कर दो.....। यही कारण है कि अपने आस- पास सभी लोग फूलों को सजाना चाहते हैं जिससे भीनी-भीनी खुशबू आती रहे। स्कॉटलैंड के रसायनशास्त्री थॉमस ग्राहम ने सन् 1883 गैसीय विसरण का नियम इत्र के विसरण से प्रभावित होकर ही दिया होगा।

खुशबू से इंसान का नाता बहुत पुराना है, एक ऐसी खुशबू की चाह सबको होती है जो मदहोश कर जाये । जब हम कोई खास किस्म की खुशबू को महसूस करते हैं तो, उसकी तरफ अनायास ही आकर्षित हो जातें हैं और ये जिज्ञासा होती है कि ये मदहोश कर देने वाली महक कहाँ से आ रही हैं, और इस तरह ये महक हमारे दिमाग में घर कर जाती है और हमारी याददाश्त के एक हिस्से में गुम हो जाती है और जब सालों बाद दोबारा उस सुगंध को महसूस करते हैं तो दिमाग के किसी कोने में दबी उस महक की यादें ताज़ा हो जाती हैं । मेरे पास इस मदहोश कर देने वाली महक की छोटी सी मगर, बहुत ही रोचक कहानी है, तो सोचा कि आप के साथ साझा करूँ।

'इत्र' फारसी शब्द है। ये 'अत्र' से बना है जिसका मतलब होता है पेड़ पौधे, फूल, पत्तियों से बना प्राकृतिक खुशबूदार तेल। इत्र का आशय चरवाहों द्वारा लाई जड़ी बूटियों से था, जिन्हें जलाने के बाद जो महक व तेल निकला था, बाद में इसे इत्र के रूप में पहचान मिली। फारस, मध्य पूर्व, भारत जैसे कई अन्य प्राचीन और समृद्ध सस्कृतियो वाले देशों में 'इत्र' का इतिहास मानव सभ्यता जितना ही पुराना है। भारतीय सस्कृति में 'इत्र' रमा हुआ है, भारत में सदियों से राज घरानों के लोग इत्र का प्रयोग करते आ रहे हैं। कई पुरातात्विक खोजों में, शाही महलों में इत्र बनाने के सामान मिले हैं। 7 वी सदी के प्रारंभ में थानेश्वर की राजगद्दी पर बैठे राजा हर्षवर्धन की राजधानी कन्नौज विश्व प्रसिद्ध है। आज भी यहाँ पुराने तरीकों से इत्र बनाया जाता है, तांबे के बड़े से कड़ाहों और बांस से बनी पाइपों के जरिए अत्तर और हाइड्रोसोल (गुलाब जल, केवडा जल)तैयार किया जाता है। कन्नौज में 250 से भी ज्यादा इत्रघर हैं। इत्रों के इस शहर ने आज भी अपनी इस कला को अपने कलेजे से लगाकर रखा है। निजामों का शहर हैदराबाद भी अपने महकतें इत्रों के लिए प्रसिद्ध है। समय के साथ यहाँ जरूर इत्र का काम कम हुआ है लेकिन उस समय की मोहक सुगंध पुराने हैदराबाद को फिर से जाग्रत कर देती हैं। अगर इत्र को सीधे त्वचा पर लगाया जाये तो इसका कोई हानिकारक प्रभाव नहीं होता, बल्कि इसकी सुगंध आधुनिक परफ्यूम के मुकाबले ज्यादा समय तक रहती है।

लगभग सभी धर्मों में इत्र का इस्तेमाल किया जाता है। एक ओर जहाँ हिन्दू धर्म में देवी- देवताओं की पूजा पाठ और धार्मिक अनुष्ठान के समय इत्र का इस्तेमाल किया जाता है, वही ईद के समय इत्र की मांग बढ जाती है। वेद, बाइबिल, कुरान और जरथुस्त्र धर्म के जेद अवेस्ता जैसे प्राचीन और पवित्र ग्रंथों में भी इत्र का जिक्र आया है। इसका उपयोग दैनिक कार्यों व धार्मिक अनुष्ठानों में किया जाता था। पुरातात्विक खोजों से पता चलता है कि भारतीय प्रायद्वीप में रहने वाले लोगों को सुगंधित पौधों के बारे मे जानकारी पहले से ही थी। समय के साथ ही धीरे-धीरे उन्होंने कुछ प्रयोग किये और पौधों को दबाकर, कूट कर और आसवन प्रकिया (डिस्टिलेशन) से सुगंधित तेल बनाने की कला को ईजाद किया । सिंधु घाटी की सभ्यता में भी खुदाई के समय इत्र रखने के जार और टेराकोटा व तांबे के बनें बर्तन मिलें है। इन बर्तनों का उपयोग 5000 वर्ष पहले किया जाता था और इन बर्तनों को 'देग' कहा जाता था। परम्परागत तरीके से इत्र बनाने वाले फूलों के मौसम में अपने 'देग' के साथ पूरे दक्षिण एशिया में यात्रा करते थे और लोगों को ताज़ा इत्र बना कर दिया करते थे ।

संस्कृत भाषा के साहित्य में भी इत्र की खुशबू का जिक्र आता है। वाराह मिहिर (505 ईस्वी -587 ईस्वी) के द्वारा छठीं शताब्दी में लिखे गये संस्कृत भाषा के ग्रंथ वृहत्संहिता मे मिलता है। उस समय खुशबू का इस्तेमाल मुख्य रूप से पूजा, बिक्री, व आत्म सुख के आनंद के लिए किया जाता था। वृहत्संहिता में एक पूरा अध्याय इत्र पर ही है और इसका नाम गधंयुक्ति है। इसमें इत्र बनाने की विधि व सामाग्री का विस्तार से वर्णन किया है और साथ ही साथ इसमें मुखवास (माउथ फ्रेशनर) बाथ पाउडर, अगरबत्ती और टैलकम पाउडर के लिए भी खुशबू बनाने की विधि का वर्णन मिलता है। भारत में इत्र बनाने की परंपरा हजारों साल पहले से है। इत्र की अगर सब से लोकप्रिय खोज की बात की जाए तो वह 'गुलाब जल' है, जिसका अविष्कार जहाँगीर की बेगम नूरजहाँ ने किया था। उत्तर भारत में 7 वी शताब्दी में लिखे गये ग्रंथ 'हर्षचरित' में 'अगर ' (ईगल वूड) की लकड़ी से बनें खुशबूदार तेल के उपयोग का वर्णन है । प्राचीन भारत में इत्र बनाने के लिए खुशबूदार फूलों और पौधों को पानी या तेल में डुबोकर रखा जाता था। इससे धीरे-धीरे पौधे अपनी खुशबू पानी या तेल में छोड़ दिया करते थे। इन इत्रों को राजघराने के लोग या महत्वपूर्ण लोग ही इस्तेमाल करते थे।

भारत में इत्र के बडे शौकीनो में मुगल बादशाहों का नाम आता है। हैदराबाद के निजाम को चमेली का इत्र बहुत पसंद था। इत्र को लेकर कई कहानियां भी लिखी गईं। महान शायर ग़ालिब भी इत्र के बहुत बडे कद्रदान थे। कहा जाता है कि जाड़े के मौसम में जब ग़ालिब अपनी प्रेमिका से मिलने गये थे तो हिना का इत्र लगाकर गयें थे। अकबर भी रोज इत्र का इस्तेमाल किया करता था। किसी भी हिन्दू व मुगल राजकुमारियो का स्नान खुशबू व इत्र के बिना पूरा नहीं होता था। मुगल रानियों व राजकुमारियो को असम में तैयार किया गया 'ऊद' का इत्र बेहद पसंद था। इत्र को कई ग्रंथों में इस संसार की सबसे कीमती वस्तु कहा गया है। यह बहुत ही गाढ़ा परफ्यूम होता है, यही कारण है कि इन्हें बहुत ही छोटी आकार की शीशियो में बेचा जाता है। काँच की शीशियों का प्रयोग इस लिए किया जाता है कि काँच में सामान्यतः कोई रासायनिक प्रक्रिया नहीं होती और इसमें इत्र की खुशबू बरकरार रहती है। ये शीशियाँ भी बहुत ही सुन्दर डिजाइन वाली होती हैं।प्राकृतिक तेल की शुद्धता के कारण इसके खराब होने की संभावना कम ही है। अगर इत्र के अर्क को पतला करने के लिए वेजिटेवल आयल मिलाया गया तो जल्दी खराब होने की संभावना ज्यादा होती है। इत्र को पारंपरिक तौर पर सजावटी और कांच की सुंदर बोतलों में भेंट दिया जाता है। इन सुदंर बोतलों को 'इत्रदान' कहा जाता है। मेहमानों को भेट में इत्र देने की परंपरा पूर्वी दुनिया के कई हिस्सों में आज भी जारी है।

इस तरह इत्र की महक ने धीरे-धीरे पूरे विश्व को अपने आगोश में ले लिया और ये सौंदर्य प्रसाधनों में सबसे प्रिय व कीमती हो गया। इसकी मदहोशी का आलम यह है कि इस पर कविता, गजल, नज्म सब रचा जाने लगा। किसी शायर ने कहा है-

'तारीफ अपने आप की
करना फिजूल है,
खुशबू खुद बता देती है,
कौन सा फूल है।'

इत्र में मानवतावाद और समरसता का मूल मित्र छिपा हुआ है। इत्र न केवल शीशियों में कैद रहता है बल्कि ढक्कन खुलते ही हवा में विलीन होकर परिवेश को इत्रमय कर देता है। दिखायी न देकर भी हर जगह, हर कण में अपनी उपस्थिति दर्ज कराता है। इस संदर्भ में डॉ अवधेश कुमार अवध का एक शेर प्रासंगिक हो जाता है-

इत्र बनकर फ़िजाओं में
फैलो अवध,
ये धरा ये गगन सब
तुम्हारे ही हैं।

नीति सिंह प्रेरणा
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

मासूमों की मासूमियत लालच की बलि पर कुर्बान

बचपन और बच्चों की मासूमियत के हम सभी दीवानें होते है। लेकिन बचपन की मासूमियत का अक्सर फायदा उठाकर उन्हें अपने लाभ के लिए प्रयोग किया जाता है। उन्हे बाल मजदूरी की आग में झोंक दिया जाता है। ताकि उनसे अधिक से अधिक लाभ कमाया जा सकें। जिसके चलते मासूम बच्चों का बचपन शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाएं से अछूता रह जाता है और वह फैक्ट्री, होटल घरों में कार्य करतें हुए दूर-व्यवहार का शिकार होते हैं। अक्सर यह बच्चें अपराधों का शिकार होते हैं। जिसके चलते उनकी शारीरिक और मानसिक हालत खराब हो जाती है।

भारत में करीब 44 लाख ऐसे बच्चे हैं जो खतरनाक स्थानों पर मजदूरी कर रहें हैं। जिन्हें अक्सर स्वास्थ्य से संबंधित बहुत सी समस्या हो जाती है। कई बच्चे ऐसे भी होते हैं जो पूरी जिंदगी सही से चल भी नहीं पाते हैं। वयस्क की अपेक्षा बच्चों से बड़ी संख्या में काम करवाया जा सकता है और उनको बहुत ही नाम मात्र पैसे देने पड़ते हैं कार्यों के लिए। इसलिए बाल मजदूरी जैसे अपराध को रोकने में कमी परेशानियां आ रही है।

बाल मजदूरी किसी भी देश के लिए एक बड़ी समस्या है। हमारे देश के भविष्य कहें जाने वाले बच्चों को चंद पैसों का लालच, श्रम की राह पर ले जाएं ऐसे में देश का भविष्य बचेगा ही नहीं। देश का भविष्य अर्थात मासूम बच्चों को बचाने के लिए बाल मजदूरी की समस्या को समझा गया ओर बाल मजदूरी का विरोध किया गया। साथ ही बाल मजदूरी को एक अपराध की श्रेणी में रख, जागरूकता फ़ैलाने की सोच को ध्यान में का विचार करते हुए 12 जून को विश्व बाल श्रम विरोध दिवस के रूप में बनाने का निर्णय लिया गया।

बाल श्रम विरोध दिवस की शुरुआत 2002 से हुई है। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन ने बच्चों के द्वारा श्रम किए जाने पर रोक लगाने और बाल श्रम विरोध के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए, इस दिन की शुरुआत की थी। इस संगठन के अनुसार विश्व भर में 2002 में 21 करोड़ 80 लाख बालश्रमिक थे। वहीं एक अन्य आंकलन द्वारा यह बात भी सामने आई कि 2002 में 1 करोड़, 26 लाख, 66 हजार 377 केवल भारत में ही बाल मजदूर थें।

वह मासूम बच्चे जिन्हें स्कूलों में जाकर शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए बाल मजदूरी का शिकार हो रहे हैं। बच्चे सड़कों के किनारे, कभी कंपनियों में, कभी घरों और हॉस्टल-ढाबे जैसे स्थानों पर अक्सर ही हमें मजदूरी करते दिख जाते हैं। जिन्हें हम देख उनकी स्थिति पर दया तो दिखाते हैं। किंतु यह उन्हें उस स्थिति से निकालने का कोई प्रयास नहीं करतें हैं। पढ़ें-लिखे होने के साथ ही साथ, सम्पूर्ण रूप सक्षम होने के बाद भी हम ऐसे बच्चों की मदद करने का कोई प्रयास नहीं करते हैं। केवल बड़ी पार्टियों में उनके बारे में चंद समय बात करके खुद को भावुक और संवेदनशील बतलाने का प्रयास करते हैं। यह जानते हुए भी कि यह कार्य कानूनी अपराध होने के साथ ही एक बच्चे के मौलिक अधिकारों का हनन भी है।

गरीब और असहाय बच्चों को अपने लाभ के लिए चंद रूपयों में खरीदा और बेचा जाता है। मासूम बच्चों को गांवों और कस्बों से उनकी परेशानियों का लाभ उठाते हुए बहला-फुसलाकर कर चंद पैसों का लालच दे कर बेंच दिया जाता है। जिसके चलते वह ना चाहते हुए भी बाल मजदूरी का शिकार हो जाते हैं। कई बार ऐसे बच्चे गैर सरकारी संगठन और पुलिस द्वारा बचा लिए जाते हैं। किन्तु फिर भी बड़ी संख्या में बच्चे बाल मजदूरी का शिकार बन रहें है। बच्चों की पसंदीदा खाने-पीने की वस्तुओं में से एक मुख्य रूप से चॉकलेट है। जिसको बच्चे बड़े चाव से खाते हैं। किन्तु इसके व्यापार उत्पादन में भी बाल मजदूरों का प्रयोग किया जाता है। जो हमारे लिए शर्म और दुख की बात है। हमारे देश में दस में से छः बच्चे खेतों में बाल मजदूरी का शिकार होते हैं। अपने ही परिवार वालों के साथ ही साथ जमींदार जैसे उच्च वर्ग के लोगों द्वारा बच्चों का शोषण किया जाता है। उनसे बाल मजदूरी करवा कर अधिक से अधिक लाभ कमाया जाता है। भारत में उत्तर प्रदेश और बिहार दो मुख्य ऐसे राज्य हैं जहां पर बहुत ही बड़ी मात्रा में बच्चों द्वारा बाल मजदूरी करवाई जाती है। जिसका मुख्य कारण यह गरीब और अशिक्षित होना है। बाल मजदूरी एक बड़ी समस्या है लेकिन इसे रोकने के लिए कार्य बहुत ही निराशाजनक जनक है। केवल कुछ गैर सरकारी संगठनों के द्वारा ही कार्य किया जा रहा है। हमारे द्वारा निचले स्तर पर इसकी ना कोई मांग है ओर ना ही हम जरूर समझते हैं, उन मासूम बच्चों को बचाने की जिनका बचपन लोगों के लालच की बलि चढ़ जाता है।

राखी सरोज

कलाकारों पर कहर, कलाएं गई ठहर

मछली पकड़ने से प्रतिबंधित, सरकारी सब्सिडी नहीं दिये जाने के सम्बन्ध में विरोध करने पुदुचेरी की सड़कों पर उतरे मछुआरे।

आधुनिक परिवेश में सांस्कृतिक मूल्यों को सहेजने का यदि कोई कार्य कर रहा है तो वह कलाकार ही हैं। मनुष्य को मनुष्यता का पाठ पढ़ाने वाली शिक्षा, जिसमें त्याग, बलिदान और अनुशासन के आदर्श निहित हैं, यदि कहीं संरक्षित है तो वह मात्र लोक कलाओं में ही है। लेकिन कोरोना महामारी के कारण देश भर में कला क्षेत्र के लोग रोजी रोटी के लिए तरस गए है, इसके पीछे सबसे बड़ा कारण है कि दुनिया भर के लोगो को अपनी कलाओं और हुनर से जगरूक करने वाले लोग अपने अधिकारों के लिए आगे नहीं आये। उन्होंने अपने आप ही सब कुछ ठीक होने में संतुष्टि समझी लेकिन उनको क्या पता था कि ये दौर बहुत लम्बा चलेगा और मंच, नुक्कड़ व् सिनेमा उनसे कोसों दूर हो जायेगा परिणामस्वरूप आज उनके पास काम नहीं है बड़े कलाकार तो जमा पूँजी पर गुजरा कर लेंगे लेकिन परदे के पीछे के कलाकारों का आज बुरा हाल है उनके लिए तो मजदूरों और प्रवासी लोगो जैसे सुर्खिया, खबरें, योजनाएं लॉक डाउन में ही कैद होकर रह गई है ।

कलाकार समाज और संस्कृति के वाहक और महत्त्वपूर्ण अंग होते हैं। यही कलाकार सभ्यता और संस्कृति को समृद्ध व समाज को जागरूक करने का कार्य करते हैं। हमारे देश और प्रदेश में वसंतोत्सव से त्योहारों का शुभारंभ माना जाता है। यह वह समय होता है जब उत्सव अपनी चरम सीमा पर होते थे और लोगों में खुशी और उत्साह का संचार होता था। परंतु वर्तमान परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए यह कहना होगा कि सरकार ने कोरोना संकट से उभरने के लिए सभी तरह के उत्सवों एवं मेलों में सोशल डिस्टेंसिंग और मिनिमम सोशल गैदरिंग को ध्यान में रखते हुए इन पर पाबंदी लगाई है। जैसे-जैसे लॉकडाउन बढ़ता गया, आगे के कार्यक्रम निरस्त होते गये। लॉकडाउन को लागू हुए दो माह से अधिक का समय बीत चुका है। इसे अब खोला जा रहा है, अब जब अनलॉक-1 लागू हुआ है तो भी इस तरह के कार्यक्रमों की न तो अनुमति है और न ही अवसर है । यहीं से इन कलाकारों का घर-परिवार चलता था। लोक कलाकारों के परिवारों पर इसका सीधा असर देखने को मिल रहा है। इन कलाकारों की रोजी-रोटी व आजीविका का साधन ही ये त्योहार, जागरण, शादियां या भागवत होते थे। अब लॉकडाउन के चलते इनके घरों का चूल्हा जलना मुश्किल हो गया है। ये कलाकार जिस भी क्षेत्र में निपुण होते हैं, उस क्षेत्र में अपनी कला का जौहर बखूबी इन्हीं कार्यक्रमों में प्रदर्शित करते थे, चाहे वह फिर गायन, नृत्य, संगीतकार अथवा अभिनय से ही संबंधित क्यों न हो। लोक कलाकार, म्यूजिशियन, साउंड सिस्टम आपरेटर और टैंट हाउस वाले अपने-अपने घर में कैद हैं और इन लोक कलाकारों की आजीविका पर कोरोना का ग्रहण लग गया है। भारत के विभिन्न लोकनाट्य यथा रामलीला, रासलीला, नौटंकी, ढोला, चौबोला, स्वांग, नाचा, जात्रा, तमाशा, ख्याल, रम्मान, यक्षगान, दशावतार, करियाला, ओट्टन थुलाल, तेरुक्कुट्टू, भाम कलापम, लोकगायन, वादन, जवाबी कीर्तन, लोकनृत्य, कठपुतली नृत्य, तथा चित्रकारी आदि से जुड़े लाखों कलाकार आज रोजी-रोटी की समस्या से ग्रसित है कुछ लोक कलाकार सोशल मीडिया जैसे फेसबुक पेज अथवा यू-ट्यूब में लाइव आकर लोगों का भरपूर मनोरंजन कर अपने आपको लोगों के बीच जीवंत रखे हुए हैं। लोक कला ही जिनके जीवन का आधार एवं रोजगार है, कोविड-19 के चलते उनका जीवन आज अनिश्चतताओं से भर गया है। उन लोक कलाकारों को यदि छोड़ दें, जिन्होंने किसी तरह से अपनी पहचान राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बना ली है तो शेष सभी कलाकारों को अपनी कला प्रदर्शन के बदले मात्र इतना ही मिलता है जिससे जैसे-तैसे वे अपना गुजारा ही कर पाते हैं। इनकी कमाई भी इतनी नहीं कि वह बिना कोई कार्यक्रम किये लम्बे समय तक अपने परिवार का भरण-पोषण कर सकें।

कलाकार समाज और संस्कृति के वाहक और महत्त्वपूर्ण अंग होते हैं। यही कलाकार सभ्यता और संस्कृति को समृद्ध व समाज को जागरूक करने का कार्य करते हैं। हमारे देश और प्रदेश में वसंतोत्स्व से त्योहारों का शुभारंभ माना जाता है।

देश के सुदूर ग्रामीण अंचलों से लेकर बड़े शहरों तक में निवास करने वाले इन कलाकारों की कला का सारा दारोमदार लोक कला के कद्रदानों पर होता है। यह भी सत्य है कि हर कलाकार को प्रतिदिन कार्यक्रम नहीं मिलते हैं। परन्तु वर्ष के कम से कम आठ महीने ऐसे होते हैं जब उन्हें हर माह पन्द्रह से बीस कार्यक्रम तो मिल ही जाते हैं।

कोविड-19 के चलते मार्च के तीसरे सप्ताह से सामाजिक दूरी की अनिवार्यता लागू होते ही इनके वो निश्चित कार्यक्रम निरस्त हो गये।

जिस गति से देश में कोविड-19 के मरीज बढ़ रहे हैं और इसकी दवा का अभी तक कहीं कोई पता नहीं है, उससे अश्विन नवरात्रि तक के कार्यक्रम भी होते हुए नहीं दिखायी दे रहे हैं। ऐसे में पूर्ण व्यावसायिक लोक कलाकारों के सामने परिवार के भरण-पोषण का गम्भीर संकट उत्पन्न हो गया है। लॉकडाउन के चलते सन्नाटा पसरा है. दुनिया भर में लोगों को घरों की चारदीवारी में कैद करने वाली कोरोना वायरस महामारी ने जीवन से गीत, संगीत, खेलकूद सभी कुछ मानों छीन लिया है। ऐसे में मानवीय संवेदनाओं के संवाहक की भूमिका निभा रहे लोक कलाकारों की व्यथा और भी गहरी है क्योंकि इनमें से अधिकतर ज्यादा पढे लिखे नहीं होने के कारण सोशल मीडिया की शरण भी नहीं ले सकते। ऐसे में ख़ाली बैठे लोक कलाकार आर्थिक मुश्किलों का सामना कर रहे हैं. सरकार को विचार करना चाहिये कि लोक कलाकारों के लिये कोई प्रबंध किया जाये क्योंकि वे कहां जाकर किससे मांगेंगे।

सहायता के लिए भारत सरकार एवं सभी राज्य सरकारों को सोचना चाहिए और जल्द से जल्द कोई मददगार योजना लानी चाहिए, हम सभी को ये दुआ करनी चाहिए कि जल्द ही कोरोना के कहर का बादल छंटे तो उनकी जिंदगी में कलाओं के रंग फिर से सजें. अन्यथा प्रवासी मजदूरों की तरह लोक कलाकारों की ये समस्या बेरोजगारी का भयावह रूप ले सकती है। ऐसे समय में समाज को दिशा देने वाले और अच्छी चीज़ों को जन-जन तक पहुँचाने वाले कहाँ से आएंगे।

सरकारों ने जिस तरह से दूसरे राज्यों से घर लौटे बेरोजगारों को रोजगार देने की मुहिम छेड़ी है, उसी तर्ज पर लोक कलाकारों के लिए विशेष नीति बनाकर उन्हें कुछ आर्थिक सहायता उपलब्ध करवाकर उनके तनाव को कम करने की जरूरत है ताकि वो समाज में आये तनाव को कम कर सके। जहां कला व कलाकार का सम्मान होता है, वहीं विकास के साथ-साथ परंपरागत सांस्कृतिक मूल्यों का सम्मान तथा संरक्षण भी होता है। यदि हम कला व कलाकार का सम्मान करेंगे, तभी हम अपनी धरोहर को सहेज पाएंगे ।

-- डॉ- सत्यवान सौरभ,

मंदिर के पट खोलो

मंदिर के पट खोलो गोविंद
भक्त खड़े दरवाजे पर
पूजा की थाली तुम्हें बुलाती
रोरी कुमकुम
तुम बिन
नहीं सुहाती।
बंद हुए क्यों
पट मंदिर के
पूछ रही पूजा की थाली।
मेरा नैना तरस रहे दर्शन को।
तुम बिन कौन सहारा मेरा।
दर्शन दे दो हे जगदम्बे
तुम बिन जीवन सुना मेरा।
रो रही है अँखियाँ संकट में
तुम कौन तारन हारा।
भक्तो पर कष्ट है भारी
माँ जगदम्बे तुम्ही सहारा।
पाप बढ़ गया जब धरती पर
तुमने शत्रु दल को मारा
छोड़ दिया क्यों
आज साथ हमारा।
इस संकट में
तुम बिन
कौन सहारा।
वृन्दावन की
गलियां सुनी
सुनी पड़ी
माँ जम्बू कटरा
सुने हो गए
सब देवालय
बंद हुई जब
पुरी तुम्हारी।
कौन जगाये अब भजन
सुना कर
कौन उतारे
आरती तुम्हारी
क्या याद नहीं
तुम को
भक्तों की आती।
कैसे बेटे से
बिन मिले माँ
सो जाती।
आज धरा पर
संकट के बादल
मंडराते और
बंद पड़े है
मंदिर तुम्हारे।

संध्या चतुर्वेदी
अहमदाबाद, गुजरात

यह सन्नाटा बहुत कुछ कह रहा है- तालाबन्दी (लॉक डाउन) खुलने के बाद अब, जबकि विभिन्न क्षेत्रों के लिए बसों का परिचालन शुरू हो गया है बावजूद इसके यह नज़ारा है हैदराबाद महानगर के महात्मागांधी बस स्टेशन का

सायकिल पर्यावरण एवं स्वास्थ्य की हितैषी

सायकिल पर्यावरण के हित में उपयोगी साबित होती आई है किन्तु चलन कम होता दिखाई देने लगा है। 1990के दशक तक लगभग हर घर में सायकिल उपलब्ध रहती थी । विशेषकर दूधवाले ,पोस्टमैन आदि द्धारा आने जाने हेतु ज्यादातर सायकिल का उपयोग किया जाता था । बच्चे सायकिल चलाना सीखने में उत्सुकता दिखाते थे । एक जानकारी के मुताबिक सन 1763 में फ्रांस के पियरे लेलमेंट ने इसकी जाना था । बाद में सायकिल में तरह- तरह के आवश्यकतानुसार बदलाव किए जाते रहे और वर्तमान में भी जारी है ।विदेशों में लोग सायकिल का ज्यादा उपयोग करते है ।एक्सरसाइज के लिए भी घरों में सायकिल का उपयोग किया जाता है ।अन्य वाहनों का उपयोग भी अपनी जगह ठीक है।किंतु सायकल चलाने से एक्सरसाइज होती है ।जिससे कई बीमारिया कोसो दूर हो जाती है ।कुछ दशकों पूर्व सायकिल का दौर काफी था ।सायकिल चलाने के दृश्य भी फिल्मों में होते ही थे ।वर्तमान में भी फिल्म की कहानी की मांग के अनुसार सायकिल के दृश्य को फिल्माया जाता है ।आज भी कई लोग सायकिल के शौकीन सायकिल से ही रास्ता तय करते है और वे पूर्णतः तंदुरुस्त है ।कई तो भारत भ्रमण भी कर चुके है ।विदेशी लोग पर्यटन स्थलों को देखने हेतु स्थानीय आवागमन की लिए सायकिल को प्राथमिकता देते है।स्थानीय आवागमन हेतु साधारणतया साइकिल का उपयोग सस्ता एवं स्वास्थ्य के हीत में एक अच्छा विकल्प है ।

एक जानकारी के मुताबिक सन 1763 में फ्रांस के पियरे लेलमेंट ने इसकी जाना था ।

संजय वर्मा 'दृष्टि' , मनावर (धार)

मानवता

यह मेरी निजी ज़िन्दगी की छोटी सी कहानी है आप सब पढ़के आशीर्वाद दीजिएगा जिससे मानवता को कायम रख सकूँ ।

वर्ष 2016 की बात है । जब मैं जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, हाथरस बी.टी.सी.प्रशिक्षु था । उन दिनों मुझे प्रशिक्षण संस्थान से एक माह की इंटर्नशिप के लिए विद्यालय जाने हेतु इंटर्नशिप रिसीविंग लैटर मिला। मैं एक दिन इंटर्नशिप के लिए विद्यालय पैदल ही जा रहा था। अचानक ही एक रिक्शे वाले बुजुर्ग अंकल की नज़र मुझ पर पड़ी । उन्होंने मुझ से रिक्शे में सवारी के लिए पूछा । मैंने मना कर दिया यह कहकर कि मेरा विद्यालय ज्यादा दूर नहीं रह गया है । रिक्शे वाले अंकल ने कहा बेटा मैं बहुत भूखा हूँ । तुम चलते तो उन पैसों से कुछ खा पी लेता । दरसल तब तक अंकल जी की बोहनी भी नहीं हुई थी । यह सब जानकर मेरा दिल अंदर से फफक पड़ा । मैंने तत्काल रिक्शे वाले अंकल को भरपेट भोजन पान कराया और बदले में उनसे खूब दुआ लीं । जिसकी हर इंसान को सबसे अधिक ज़रूरत होती है । पर आज का इंसान गरीब दीन दुखियों दुआओं को महत्व देता नहीं है। इस वाकयात ने मुझे मानवता का पाठ पढ़ाया जो ज़िन्दगी में हर एक को पढ़ना चाहिए क्योंकि जिस मानव ने मानवता का पाठ नहीं पढ़ा है वह असल में शिक्षित ही नहीं है । इसी विषय मानवता के ऊपर मैंने एक शेर लिखा है अर्ज़ करता हूँ ।

इस वाकयात ने मुझे मानवता का पाठ पढ़ाया जो ज़िन्दगी में हर एक को पढ़ना चाहिए क्योंकि जिस मानव ने मानवता का पाठ नहीं पढ़ा है वह असल में शिक्षित ही नहीं है ।

पढ़ना लिखना सब बेकार है,
गर आदमी से आदमियत दरकिनार है।

अतुल पाठक
हाथरस

माया मोह का प्रबन्ध किये बिना कैसा संन्यासी?

संन्यस्त व्यक्ति को गांव के बाहर रहना चाहिए और बेघर हो जाना चाहिए। सदा एक स्थान से दूसरे स्थान के लिए चलते रहना चाहिए। यदि संन्यासी चाहे तो गंगा तट के समीप अपना वास स्थान निर्धारित कर सकता है। ऐसा व्यक्ति जो बिना पत्नी, पुत्र, पौत्र और सम्पत्ति का प्रबंध किये संन्यासी बन जाता है उसे भयंकर दण्ड का भागी बनना होता है।

अपने दिव्य दर्शन और प्रकाश के आधार पर सिद्धान्त एवं व्यवहार की प्रेरणा प्राचीन ऋषियों, मनीषियों और मुनियों ने दीं। वर्ण का सिद्धान्त सम्पूर्ण समाज के लिए और आश्रम का सिद्धान्त व्यक्ति के लिए स्वीकार्य रहा। यही कारण है कि आश्रम सिद्धान्त व्यक्ति के आध्यातिमक लक्ष्य, जीवन यापन की विधि और जीवन के मोक्ष मार्ग की प्राप्ति का नियमन करता है। उद्देश्य की पूर्ति के धर्म सूत्र में चार प्रकार के आश्रमों का उल्लेख मिलता है। ये हैं-ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास। संहिता एवं ब्राह्मण ग्रन्थों में आश्रम शब्द का उल्लेख नहीं किया गया है।

ब्रह्मचर्यः ब्रह्मचारी शब्द ऋग्वेद और अथर्ववेद में आया है जिसकी चर्चा तैत्तिरीय संहिता, शतपथ ब्राह्मण एवं अन्य वैदिक ग्रन्थों में की गयी है।

गृहस्थः ऋग्वेद के मतानुसार, देवताओं के लिए यज्ञ और सन्तानोत्पत्ति के लिए इस आश्रम को बताया गया है। ब्राह्मण के अनुसार-स्त्री को जाया कहा गया है क्योंकि पति ही पुत्र के रुप में अपनी पत्नी के गर्भ से जन्म लेता है। इसी प्रकार की एक अन्य धारणा यह भी कहती है कि पत्नी पति की अर्धांगिनी होती है जब तक एक व्यक्ति विवाह कर सन्तानोत्पत्ति नहीं करता है वह पूर्ण नहीं होता है। मनुस्मृति ने एक कदम आगे बढ़ते हुए यहां तक घोषणा कर दिया है कि पत्नी पर सन्तानोत्पत्ति, धार्मिक कृत्य, सेवा, आनन्द, अपने तथ अपने पूर्वजों की स्वर्गप्राप्ति निर्भर है। पत्नी अपने पति को सदैव दो ऋणों से मुक्त करती है-यज्ञ, दैवीय अनुष्ठानों में सहयोग करते हुए देवऋण से तथा सन्तानोत्पत्ति करके पितृऋण से।

सख्त नियमों का पोषक वानप्रस्थः वानप्रस्थ के लिए प्राचीनकाल में वैखानस शब्द का प्रचलन था। मिताक्षरा के अनुसार वानप्रस्थ का तात्पर्य है कि वह जीवन में सर्वोत्तम ढंग जीवन के कठोर नियमों का पालन करते हुए रहा है।

वानप्रस्थ दो प्रकार से आता है-मनुस्मृति के अनुसार-जब गृहस्थ अपने शरीर पर झुर्रियों को देखे, बाल पक कर चाँदी की भांति श्वेत हो जायें तथा पुत्रों के पुत्र उत्पन्न हो जाये तो व्यक्ति को वन की राह पकड़ लेनी चाहिए। वानप्रस्थी को वेदाध्ययन में श्रद्धा रखनी चाहिए और वेद पाठ करना चाहिए।

जीवन का सर्वोच्च मार्ग प्रशस्त करने वाला संन्यास अथवा मोक्षाश्रम-

जाबालोपनिषद में संन्यास को चौथे और अंतिम आश्रम के रुप में ग्रहण किया। घर पर पुत्र, सम्पत्ति और पत्नी का त्याग इस आश्रम की विशेषता स्वीकार्य है। संन्यस्त व्यक्ति को गांव के बाहर रहना चाहिए और बेघर हो जाना चाहिए।

सदा एक स्थान से दूसरे स्थान के लिए चलते रहना चाहिए। यदि संन्यासी चाहे तो गंगा तट के समीप अपना वास स्थान निर्धारित कर सकता है। ऐसा व्यक्ति जो बिना पत्नी, पुत्र, पौत्र और सम्पत्ति का प्रबंध किये संन्यासी बन जाता है उसे भयंकर दण्ड का भागी बनना होता है।

कर्तव्यपरायण, दृढ़निश्चयी तथा आत्मविश्वास से लबरेज अमर शहीद बिस्मिल

विश्व में क्या कोई ऐसा व्यक्ति भी देखने व सुनने को मिला है जो अपनी मृत्यु को सुनिश्चित जानकर भी उसको ऐसे टाल जाए जैसे कोई बात ही न हुई हो।

गोरखपुर। ''सरफरोशी की तमन्ना, अब हमारे दिल में है। देखना है जोर कितना बाजू-ए-कातिल में है'' इन प्रेरणादायक पंक्तियों के लेखक और काकोरी काण्ड के अमर शहीद राम प्रसाद बिस्मिल के जन्म दिवस पर आज (कोरोना वायरस के चलते उचित दूरी व मास्क का प्रयोग कर) शास्त्रीनगर में एक कार्यक्रम का आयोजन कर नगरवासियों ने बिस्मिल जी के चित्र पर माल्यार्पण करते हुए अपनी भावभीनी श्रद्धाजंलि अर्पित की और उन्हें देशभक्ति का साक्षात प्रतिमूर्ति बताया। इसीक्रम में एक विचार गोष्ठी का भी आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता सामाजिक कार्यकर्ता सुभाष चन्द्र अकेला एवं संचालन युवा समाजसेवी आशीष प्रिय अग्रहरि ने किया। विचार गोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे सामाजिक कार्यकर्ता सुभाष चन्द्र अकेला ने बिस्मिल के चित्र पर माल्यापर्ण करते हुए कहा कि ''वन्देमातरम एवं भारत माता की जय कह कर स्वयं फॉसी को अपने गले में डाल कर मौत का आलिंगन करने वाले काकोरी काण्ड के अमर शहीद राम प्रसाद बिस्मिल का जन्म भले ही चम्बल के तट पर हुआ हो, लेकिन उनकी क्रान्ति भूमि गोरखपुर ही रही और उस क्रान्तिवीर के आखिरी स्वर भी गोरखपुर में ही गूंजे थे।

उन्होंने बड़े ही भावुक शब्दों में कहा कि भारत के इतिहास में यह अपने ढ़ग की अनोखी और पहली घटना है कि जिस व्यक्ति को फॉसी की सजा सुनाई जाने वाली हो और वह व्यक्ति एकचित, शान्त व स्थिर फॉसी की कोठरी में बैठ कर अपने जीवन की आत्मकथा लिखे। विश्व में क्या कोई ऐसा व्यक्ति भी देखने व सुनने को मिला है जो अपनी मृत्यु को सुनिश्चित जानकर भी उसको ऐसे टाल जाए जैसे कोई बात ही न हुई हो। कर्तव्यपरायण, दृढ़निश्चयी एवं आत्मविश्वास से लबरेज अमर शहीद बिस्मिल सचमुच देशभक्ति के साक्षात प्रतिमूर्ति रहे। उपरोक्त अवसर पर वरिष्ठ समाजसेवी के.पी. गुप्ता व सुरेश निषाद ने कहा कि देश भक्ति की चाह बिस्मिल जी के हृदय में बचपन से ही जाग गयी थी और उन्होने 19 वर्ष की अल्पायु में ही देश की नब्ज को पहचाना वो कर दिखाया कि अंग्रेज सरकार के दांत खट्टे हो गये। देश का जन-जन आज सौ-सौ बार नमन कर रहा है।

इसी क्रम में भगत सिंह क्रान्ति परिषद के नेता वीर सिंह ने कहा कि '' बिस्मिल जी भारत मॉ के सच्चे सपूत थे। फॉसी पर लटक कर भले ही ये हमारे बीच से चले गये लेकिन आज भी ये हमारी आजादी के रूप में जीवित हैं।

विचार गोष्ठी में मुख्य रूप से सामाजिक कार्यकर्ता सुभाष चन्द्र 'अकेला', भगत सिंह क्रान्ति परिषद के नेता वीर सिंह, सुरेश निषाद, के.पी.गुप्ता, चन्दन प्रिय अग्रहरि, विवेक अग्रहरि, प्रदीप अग्रहरि, रमाकान्त पाण्डेय, विनोद कुमार गुप्ता, डॉ. एस.पी. सिंह, आशीष प्रिय गुप्ता, सूरज कुमार चैरसिया, मुकेश, विकास, अल्ताफ खान, जितेन्द्र कुमार सोनकर, सहित तमाम स्थानीय गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

जीवन की नई शुरुआत

जीवन के इन बदलते पहलुओं का क्या कोई उपाय और नहीं हो सकता था।लॉक डाउन हालांकि बहुत ही जरूरी हो गया था और करना भी था लेकिन लगातार अपने घर में बैठकर कब तक काम चलेगा। कोई भी व्यक्ति आपको घर मे बैठे रहने की तनख्वाह कब तक दे देगा।

जब से कोरोना वायरस महामारी का फैलाव दूसरे देशों की तरह भारत में बढ़ने लगा जिसकी वजह से लोगों को घर में रहना पड़ा और लोगों के घर में रहने के कारण परिस्थितियां कुछ ऐसी बनी कि हमारे देश में बहने वाली नदियां उनका पानी लगातार साफ होता चला गया। जीवन के इस बदलाव या इस पहलू में लोग कहने लगे कि जो काम काफी समय से नहीं हो पा रहा था। नदियों को साफ करने का.वह अपने आप होता चला गया।इसी प्रकार वातावरण में होने वाले प्रदूषण के कारण लगातार हवा में जो जहर फैलता जा रहा था।वह भी प्रदूषण फैलाने वाले वाहन ना चलने की वजह से बहुत कम होता चला गया, लेकिन लोगों के जीवन में होने वाले इस बदलाव को सही कहना कितना सही है। इस बारे में विचार करना होगा। जीवन के इस पहलू को सब लोग अच्छा महसूस कर रहे हैं। लेकिन लगातार ऐसा महसूस हो रहा है कि पर्यावरण और नदिया तो साफ हो जाएंगी।लेकिन बहुत से लोगों का काम लगभग चौपट होने की अवस्था में आ जायेगा।

छोटे कारोबारी हो या बड़े कारोबारी सभी लोग लगातार लॉक डाउन में बहुत परेशान है और कुछ व्यापारियों के तो काम ही बंद होने की कगार पर आ गए हैं।लगातार बड़े-बड़े शहरों से मजदूरों के पलायन के बाद छोटी-छोटी कंपनियां मजदूरों के अभाव में बंद होने की कगार पर आ जाएंगी।

जीवन के इन बदलते पहलुओं का क्या कोई उपाय और नहीं हो सकता था।लॉक डाउन हालांकि बहुत ही जरूरी हो गया था और करना भी था लेकिन लगातार अपने घर में बैठकर कब तक काम चलेगा।कोई भी व्यक्ति आपको घर मे बैठे रहने की तनख्वाह कब तक दे देगा।

पर्यावरण और नदिया तो साफ हो जाएंगी लेकिन इसका असर देश की अर्थव्यवस्था पर बहुत ही भयंकर होगा।कोरोना काल मे जीवन में सिर्फ एक ही अच्छी बात सीखी जा सकती है।कि अब हर व्यक्ति को अपने जीवन के नए रूप में जीने की आदत डालनी होगी।यह जो बदलाव आपके घर रहने से पर्यावरण और नदियों के पानी में आया है।कोशिश करनी होगी कि सब काम करते रहने के साथ साथ इन सबको साफ रखने का भी ध्यान रखना होगा। कोशिश करनी होगी कि सारी चीजों का ध्यान रखते हुए अब आगे जीवन तो जिया जाए और अपने कार्यों को भी आगे बढ़ाया जाए।जीवन के इस नए पहलू को एक पॉजिटिव में लेकर आगे बढ़ना होगा। जिससे देश का भी निरंतर विकास होता रहे और आम आदमी के जीवन मे भी कोई आजीविका की परेशानी ना आये।

नीरज त्यागी
ग़ाज़ियाबाद (उत्तर प्रदेश).

अनुमान से आगे निकला करोना !

भ्रांतिया यू उठी थी कि, जून तक करोना समाप्त हो जाएगा। लोगो को अपने किवदंतियों पर विश्वास हो चला था,लोग मानते थे कि भारत में करोना के अधिकतम दो लाख रोगी ही होंगे किन्तु सभी आंकड़े अनुमान धरे के धरे रह गए । डॉक्टर्स में से अधिकांश का अनुमान था कि मई-जून की गर्मी यानि 50 डिग्री पर तो यह वायरस हमारा पीछा छोड़ेगा परन्तु हर किसी का अनुमान अनुमान ही साबित हुआ । कोरोना संक्रमितों की संख्या दहाई से सैकड़ा, हजार होते हुए लाखों में पहुँच गई और अब करोड़ों का अनुमान लगाया जा रहा है। ज्योतिषों की सारी तारीखें गलत साबित होती जा रही है ।चिकित्सकों के सारे अनुमान ध्वस्त होते जा रहे है । अब लगता है विश्व भर में जितने भी कोरोना से सम्बन्धित चिकित्सकीय शोध हुए है उनकी फुर्सत में जब ऑडिटिंग की जाएगी तब आधे से अधिक फर्जी पाए जायेंगे

अभी भी अनेक लोगों का अनुमान है कि जून के अंत तक भारत में 12-14 लाख संक्रमित होंगे तथा अगस्त सितम्बर में यही संख्या करोड़ों में भी पहुँच सकती है। ऐसे में अनेक लोग कह रहे है कि संख्या जब दहाई में थी तब लॉक डाउन और अब जब लाखों में है तो सब कुछ खुला ? यह थोड़ा अजीब है ? अभी अनुमान जुलाई अगस्त तक अधिकतम आने का है लेकिन कोई कह सकता है कि वह पीरियड आगे नहीं बढ़ेगा ? हो सकता है नवम्बर दिसम्बर हो जाए। पीक आने के बाद भी संख्या एक दम शून्य तो नहीं होनी है। जैसे बढ़ा है वैसे ही धीरे धीरे घटेगा । हो सकता है तब तक कोरोना की सेकंड वेव आ जाए। हर वैश्विक महामारी में ऐसा होता ही है बल्कि इस संकट में तो यह भी कहा जा रहा है तीसरी वेव भी आएगी । तब फिर क्या अनंत काल के लिए लॉक डाउन रखा जाए ? यह न तो देश और लोगों की आर्थिक सेहत के लिए उचित है और न ही उनकी शारीरिक व मानसिक सेहत के लिए।कोरोना वायरस चीन से कुछ अन्य देशों में पहुंचा, फिर उसे वैश्विक संकट माना जाने लगा ।पश्चिमी देशों में उस वायरस का व्यवहार कैसा रहा उसके अनुमान के आधार पर भारत सरकार को स्थिति बहुत अधिक गम्भीर लगी । सम्पूर्ण भारत में लॉक डाउन किया गया क्योंकि जितनी गम्भीर बीमारी थी वैसी गंभीर तैयारियों के लिए समय की जरूरत थी, साथ ही साथ यह समाज में ना फैले यानि कम्युनिटी स्प्रेड न हो तथा आम लोग बीमारी की गम्भीरता समझे, क्या सावधानियां रखनी है यह वे ठीक से समझ जाए इसके लिए भी समय की जरूरत थी । सरकार को जो अस्पतालों में जो तैयारियां करनी थी हो चुकी । अनुमान से कई गुणा अधिक संकट हो तो अलग बात है वरना हमारे अस्पताल सेवाएँ देने में कम नहीं पड़ेंगे । कम्युनिटी स्प्रेड सारे प्रयासों के बाद भी भी नहीं रोका जा सका । अब तक इसकी गम्भीरता को जिन्हें समझना था समझ गए जो बेफिक्र है उन्हें कोई नहीं समझा सकता । सावधानियां क्या रखनी है हम सब समझ गए है । हर वक़्त हाथ पकड़ कर कोई नहीं खींचेग। आखिर समझदारी खुद को दिखानी होगी कि कब कहाँ किस खतरे से हमें बचना है । मोटे तौर पर जो समझ आया है वह यह कि भारत में संक्रमण कि दर भी पश्चिमी देशों से कम है और मृत्यु दर भी कम है (बंगाल और गुजरात इसके अपवाद है)। जिसने भी सावधानी रखी है तो उसे काम करते हुए भी कोई संक्रमण नहीं हुआ ह। अपवाद स्वरूप कोई बदकिस्मत हो तो अलग बात है।सरकार को कोसना या तारीफ करना आपका लोकतान्त्रिक अधिकार है ऐसा करते रहें पर सौ बातों की एक बात कि सावधानियों के साथ काम पर निकलिए । अभी केवल वहीं जाएं जहाँ बेहद जरूरी हो। समय के साथ बीमारी का व्यवहार देख कर ही हमें अपनी स्ट्रेटेजी बदलनी होगी। कुछ समय के लिए यात्राएं, घूमना, फिरना, मॉल, रेस्टोरेंट, मन्दिर, मस्जिद, शादी, मृत्यु पर जाना है या नहीं जाना है यह हमें तय करना होगा। सब कुछ सरकार के कंधों पर डाल कर उसके अच्छे बुरे की जिम्मेदारी के लिए उसे गाली देने की परम्परा स्वस्थ परम्परा नहीं कही जा सकती ।

पंकज कुमार मिश्रा

व्यक्तिवाद ने किया बर्बाद

गरीब-अमीर,वंचित-शोषित,
सबको प्यारा अपना संविधान।
जिसे बनाने के लिए दिया था,
बाबा साहब ने अपना अहम
योगदान।
उसी से मिली हमें लोकतांत्रिक
प्रणाली,
जो भारत को बनाता दुनिया में
महान।
सबसे पुरानी
गणतांत्रिक प्रणाली में,
भारत की
वैशाली को अपनी पहचान।
दुनिया के एक-एक
लोग जानते हैं,
लोकतांत्रिक प्रणाली में
लोग प्रधान।
समाजवादी, पंथनिरपेक्ष,
लोकतांत्रिक प्रणाली,
भारतीय संविधान की
अनोखी पहचान।
मौलिक अधिकार,
नीति निर्देशक तत्व,
भारतीय संविधान की
असली ताकत-प्राण।
लोकतंत्र को व्यक्तिवाद
बर्बाद कर रहा है,
जिसका समाजवाद ने
हमेशा बढ़ाया शान।
पांच वर्ष पर
संविधान के रक्षक चुनती है,
लोकतांत्रिक
भारत की जनता महान।
जो संवैधानिक प्रावधानों से
छेड़छाड़ करते,जनता उन्हें हटाती
पकड़ करके गिरहबान।
लोकतांत्रिक प्रणाली में
सबसे ऊपर संविधान,
भारतवासी बहुत अदब से करते
उसका सम्मान।

गोपेंद्र कु सिन्हा गौतम

कौन हो तुम

तुम जरूरत हो,
ख्वाहिश हो,
आदत हो या
हो कोई
कमजोरी
जो भी हो
इस बदले अंदाज़ का
राज हो तुम
इस मुस्कान के पीछे
नाम हो तुम
मेरा इंतज़ार
मेरा ख्वाब हो तुम।
वो किताब हो तुम
जिसे सीने से लगा,
बंद आँखों से
मै पढता हूँ
तुम वह आवाज़ हो
जिसको अपनी
धड़कन में
मैं अब सुनता हूँ
तुम्हारी बेकरारी को
इन साँसों में महसूस करता हूँ
तुम आँखों में हो और फिर भी
अपने हर पल में
तुम्हें ढूंढ़ता हूँ।
मेरी उलझन को जो सुलझाये
वह डोर हो तुम
मेरे शब्द मेरे बोल हो तुम
मुझे नहीं पता कैसी आदत
कैसी जरूरत हो तुम
मैं खुश हूँ कि
सिर्फ मेरी हो तुम।।

प्रफुल्ल सिंह 'बेचैन कलम'
लखनऊ।

नासूर

खुद को ही
खुदा समझ बैठे हो तुम ?
क्या खुदाई नजर नहीं आ रहीं
उस खुदा की ? क्यों तुम
अपनी शख्सियत के बोझ तले
दबा रहे हो आज भी
और लोगों को ?
क्या तुम को
रता भर भी एहसास नहीं है,
कि दबे हुए लोग जब उठेंगे
तो उखाड़ कर फेंक देंगे,
तुम्हारी जिद्दी शख्सियत को।
क्यों तुम औरों को
दिखाकर नीचा,
खुद को ही
मसीहा समझ बैठे हो
खुद की नजरों में ।
क्या तुमको
रता भर बुराई नजर नहीं आती ?
खुद की बिखरी हुई शख्सियत
में?
जो औरों के हृदय को भी
कीलित कर रही है
नासूर
खुद को ही
खुदा समझ बैठे हो तुम ?
क्या खुदाई नजर नहीं आ रहीं
उस खुदा की ?
क्यों तुम
अपनी शख्सियत के बोझ तले
दबा रहे हो आज भी
और लोगों को ?
क्या तुम को
रता भर भी एहसास नहीं है,
कि दबे हुए लोग जब उठेंगे
तो उखाड़ कर फेंक देंगे,
तुम्हारी जिद्दी शख्सियत को।
क्यों तुम
औरों को दिखाकर नीचा,
खुद को ही
मसीहा समझ बैठे हो
खुद की नजरों में ।
क्या तुमको
रता भर बुराई नजर नहीं आती ?
खुद की बिखरी हुई शख्सियत
में?
जो औरों के हृदय को भी
कीलित कर रही है
बनकर नासूर।
राजीव डोगरा 'विमल'बनकर
नासूर।

राजीव डोगरा 'विमल'

गाय महज पशु नहीं, वरन् आस्था

गो हत्या देश में हमेशा से ही एक संवेनदशील मुद्दा रहा है और इस पर राजनीति होती रही है। मगर जिस समाज में गाय को पूजा जाता है,उसके वध पर अंकुश नहीं, और वहां इसके लिए कोई कानून नहीं हो तो वह कैसा समाज ? हिंदू धर्म शास्त्रों के अनुसार गाय को गौ माता भी कहा जाता है। गौ माता के पूजन के बारे में वेदशास्त्रों, धर्मग्रंथो में क्या कहा गया है। इसलिए अगर किसी के हाथों गाय की हत्या हो जाती है तो यह घोर पाप माना जाता है।

सन् 2016 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को कहना पड़ा, 'मुझे पता है कुछ लोग जो रात में आपराधिक गतिविधियों में लिप्त रहते हैं, वे सुबह उठ कर गो रक्षक का चोला ओढ़ लेते हैं.' मॉब लिंचिंग और गो रक्षा के नाम पर होने वाली हिंसा को देख कर कई बार मांग उठी कि गो वध के विरुद्ध सख़्त क़ानून बना दिया जाए। कुछ तो गो वध को देश भर में प्रतिबंधित करने का आग्रह भी कर चुके हैं। गो वध के बाबत इस समय विभिन्न क़ानून हैं। देश के 28 में से 20 राज्यों में गो वध पर रोक है, लेकिन बंगाल, केरल, असम, अरुणाचल प्रदेश, मिजोरम, मेघालय, नागालैंड, त्रिपुरा में बीफ कानूनी तौर पर सब जगह मिलता है.

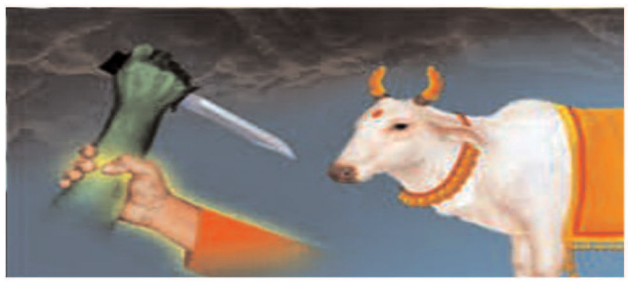

उच्चतम न्यायालय ने गो वध मामले में अक्सर इसके आर्थिक पहलू को नज़र में रखा है, जैसे उपयोगी पशुओं का वध न हो, लेकिन वे पशु जो आर्थिक रूप से बोझ बन रहे हों, उन पर यह रोक न हो। कुछ क़ानून विशेषज्ञों का यह भी कहना है कि एक लोकतांत्रिक देश में, एक वर्ग की भावनाओं को ठेस न पहुंचे, इस कारण से देश के अन्य नागरिकों को उनके आहार से क़ानूनन रोकना बुद्धिमानी नहीं है लेकिन मुस्लिम उलेमा यानी धार्मिक विद्वान शुरू से इस मामले में कानूनी बहस करते हैं।

गो-हत्या पर कोई केंद्रीय क़ानून नहीं है। पर अलग राज्यों में अलग-अलग स्तर की रोक दशकों से लागू है। भारत के 29 में से 11 राज्य (केरल, पश्चिम बंगाल, असम, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय, मिज़ोरम, नगालैंड, त्रिपुरा, सिक्किम और एक केंद्र शासित राज्य लक्षद्वीप में गो-हत्या पर कोई प्रतिबंध नहीं है) ऐसे हैं जहां गाय, बछड़ा, बैल, सांड और भैंस को काटने और उनका गोश्त खाने पर कोई प्रतिबंध नहीं है, बाक़ी 18 राज्यों में गो-हत्या पर पूरी या आंशिक रोक है. देश के 11 राज्यों - कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, और दो केन्द्र प्रशासित राज्यों-दिल्ली, चंडीगढ़ में पूरा प्रतिबंध लागू है. गो-हत्या क़ानून के उल्लंघन पर सबसे कड़ी सज़ा भी इन्हीं राज्यों में तय की गई है. हरियाणा की भाजपा सरकार ने 2015 में गो संरक्षण एवं गो संवर्धन कानून बनाया था। गोवध पर हरियाणा का कानून दूसरे राज्यों से काफी कड़ा है। इसमें अधिकतम दस वर्ष की कैद और तीस हजार रुपये से एक लाख रुपये तक जुर्माने का प्रावधान किया गया है। जुर्माना न भरने पर एक वर्ष का और कारावास भुगतना होगा। वहीं महाराष्ट्र में गो-हत्या पर 10,000 रुपए का जुर्माना और पांच वर्षों की जेल की सज़ा है। हालांकि छत्तीसगढ़ के अलावा इन सभी राज्यों में भैंस के काटे जाने पर कोई रोक नहीं है.भारत की 80 प्रतिशत से ज़्यादा आबादी हिंदू है जिनमें ज़्यादातर लोग गाय को पूजते हैं. लेकिन ये भी सच है कि दुनियाभर में 'बीफ़' का सबसे ज़्यादा निर्यात करनेवाले देशों में से एक भारत है। दरअसल 'बीफ़', बकरे, मुर्ग़े और मछली के गोश्त से सस्ता होता है. इसी वजह से ये ग़रीब तबक़ों में रोज़ के भोजन का हिस्सा है, खास़ तौर पर कई मुस्लिम, ईसाई, दलित और आदिवासी जनजातियों के बीच.

कई राज्यों में आज भी गोवध जारी है। दुनिया भर में गोमांस निर्यात किया जाता है। देश के कुछ प्रदेशों में खुलेआम गोमांस बेचा जाता है। गाय के प्रति ये दोहरी नीति समझ से परे है। बहरहाल, गोवध रोकने के लिए उत्तर प्रदेश सरकार का यह सराहनीय प्रयास है।

हाल ही में उत्तर प्रदेश सरकार गोवंशीय पशुओं की रक्षा और गोकशी की घटनाओं से जुड़े अपराधों को रोकने लिए अब और सख्ती करने जा रही है। इसके तहत इस तरह के अपराधों को संज्ञेय व गैरजमानती बनाया जाएगा। दंड व जुर्माने को भी बढ़ाया जाएगा। गोकशी करने पर अब दस साल की सजा होगी। अभी तक गोवंश को नुकसान पहुंचाने पर सजा का प्रावधान नहीं था। अब इसमें एक साल से सात साल तक की सजा का प्रावधान कर दिया गया है। इस कदम से गोवंशीय पशुओं को हानि पहुंचाने व उनके गैरकानूनी व अनियमित परिवहन पर अंकुश लगाने में मदद मिलेगी। इसके लिए सरकार उत्तर प्रदेश गो-वध निवारण (संशोधन) अध्यादेश-2020 लाएगी। इसका मकसद गोकशी की घटनाओं व गोवंश से जुड़े अपराधों को पूरी तरह रोकना है। अब राज्य में गोकशी करने पर अब दस साल की सजा होगी जो कोई धारा -3, धारा-5 या धारा-5 'क' के उपबन्धों का उल्लंघन करता है या उल्लंघन करने का प्रयास करता है या उल्लंघन करने के लिए दुष्प्रेरित करता है, वह तीन साल से 10 साल की सजा पाएगा।

जुर्माना तीन लाख से पांच लाख तक होगा। अगर एक बार दोष सिद्ध होने के बाद पुनः अपराध करते पाया गया तो उसे दोहरे दंड से दंडित किया जाएगा। ऐसे अपराधों के अभियुक्तों का नाम, फोटोग्राफ, उसका निवास स्थल है, प्रकाशित किया जाएगा। राज्य में किसी अगर किसी वाहन में गोमांस निकला तो चालक, वाहन मालिक व आपरेटर पर कार्रवाई होगी जो गाय बरामद होंगी और उनके भरण-पोषण पर व्यय की वसूली अभियुक्त से एक वर्ष की अवधि तक अथवा गाय या गोवंश को निर्मुक्त किए जाने तक, जो भी पहले हो, स्वामी के पक्ष में की जाएगी। गोवंशीय पशुओं को शारीरिक क्षति द्वारा उनके जीवन को संकट में डालने अथवा उनका अंग-भंग करने और गोवंशीय पशुओं के जीवन को संकट में डालने वाली परिस्थितियों में परिवहन किए जाने पर अब तक दंड नहीं था। अब यह अपराध करने पर कम से कम एक वर्ष का कारावास होगा और 7 वर्ष तक हो सकता है। जुर्माना एक लाख से तीन लाख तक हो सकता है। लेकिन देश में कहीं भी उन गायों के लिए कोई प्रवाधान नहीं है, जिन्हें बेसहारा छोड़ दिया जाता है। नतीजन वे अक्सर दुर्घटनाओं का शिकार हो जाती हैं। कई बार वे पोलिथीन खा जाती हैं, जिससे गंभीर रूप से बीमार हो जातीहैं। गोशालाओं की दुर्दशा भी किसी से छिपी नहीं है। अक्सर ही गोशालाओं में भूख से गायों के मरने की खबरें आती रहती हैं। गायों की देखभाल करने के लिए बनाई गई गोशालाओं की दुर्दशा पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए उनके चारे और स्वास्थ्य का का भी ध्यान रखा जाना चाहिए। जो गाय दूध देने के काबिल नहीं रहतीं, उन्हें कुछ लोग सड़क पर खुला छोड़ देते हैं। ऐसे लोगों के खिलाफ भी सजा का प्रावधान होना चाहिए। गाय को लावारिस सड़क पर छोड़ देना भी सही नहीं है। अगर लावारिस गाय दुर्घटना का शिकार होकर मर जाए तो उसे भी गोवध ही माना जानाचाहिए। गाय महज एक जानवर नहीं है। यह भारतीय समाज के लिए आस्था भी है। कुछ लोग गोवध करके इस आस्था पर चोट करते हैं, जो नहीं होनी चाहिए। वैसे यह भी विडंबना है कि कई राज्यों में आज भी गोवध जारी है। दुनिया भर में गोमांस निर्यात किया जाता है। देश के कुछ प्रदेशों में खुलेआम गोमांस बेचा जाता है। गाय के प्रति ये दोहरी नीति समझ से परे है। बहरहाल, गोवध रोकने के लिए उत्तर प्रदेश सरकार का यह सराहनीय प्रयास है। गोवंश बचाया ही जाना चाहिए।

डॉ. सत्यवान सौरभ,

'फिर यह अंतर क्यों है?'

हमने भी तुमको प्यार किया
हमनें भी तो श्रमस्वेदो से,
तेरी कुटिया को सीचा !
बदले मे मुझे तिरस्कार!
और बेटे को अधिकार,
मिला
मेरी गलती क्या थी?
बेटी होना ?
या आज्ञाकारी
होना ?
जब चाहा, जहाँ विवाह किया
जो चाहा नेग
दिया न,दिया
कर दिया मुझे घर से बेघर!
बेटी तेरी मेहमान हुई
जिस'घर मे
मैने जन्म लिया
जीवन को देखा
और जिया
उस पर कोई अधिकार नहीं
मिलता है कहीं दुलार नही
मै भी तो भैया
के संग में
खेती बाड़ी करवाती थी
वह ढ़ोता कोई बोझ
अगर ,मै वह बोझा
उठवाती थी।
वह करता था
बाजार तो,
मैं घर आँगन
लीपा करती थी ।
वह खाता माखन
मिश्री तो मैं,पीकर
छांछ खुश रहती थी।
वह किया पढ़ाई
शहरो में, मैं घर पर
पढ कर उन्मत्त रही।
वह खानदान का
मान अगर ,मै भी
तो कुल की लाज थी ।
फिर ऐसा,
अंतर क्यों है?
माँ बाप हुए प्रस्तर क्यों हैं

प्रियंवदा पाण्डेय
देवरिया उत्तर प्रदेश

अभी नहीं देखा

सिर को झुकते देखा है,
पर झुकाते नहीं देखा
अभी अपनापन देखा है,
परायापन नहीं देखा
अभी प्यार देखा है,
नफरत नहीं देखी
अभी दोस्ती देखी है,
दुश्मनी नहीं देखी
अभी इज्जत देते हुए देखा है,
बेइज्जती नहीं देखी
सब कुछ पाते हुए देखा है,
सब कुछ खोते हुए नहीं देखा
सबको साथ देते देखा है,
अकेलापन नहीं देखा
मेरी खामोशी देखी है,
मुझे ज्वालामुखी बनते नहीं देखा
पानी जैसे शांत चलते देखा है,
उसी पानी को सब कुछ
बहाते ही नहीं देखा
अभी सिर्फ तूफान देखा है,
तूफान को बवंडर बनते नहीं देखा
सच्चाई पर पर्दे पड़े देखे हैं,
उन परदो को उठते नहीं देखा

अमित डोगरा

यह मेरी हसरत है

जीवन में मन चाहे रंग भर सकूँ
.....यह मेरी हसरत है
खुशी प्यार बेशुमार लुटा सकूँ
.....यह मेरी हसरत है
सब के चेहरे पे हँसी मुस्कान ला सकूँ
.....यह मेरी हसरत है
अपनी ज़िन्दगी में एक अच्छा इंसान बन सकूँ
.....यह मेरी हसरत है
सारी रात जुगनू की चाहत में
सितारों की सजी महफ़िल में
अरमानों की बाहों में रहने की
.....यह मेरी हसरत है
दिल के खजाने में नाकाम ख़्वाहिशों को मेरी हसरत नाम दूँ
..... यह मेरी हसरत है

अतुल पाठक
जनपद हाथरस

'लागल रहा बताशा'

इस लॉक डाउन में भोजपुरी फिल्म के दर्शकों के लिए एक अच्छी खबर है , जी हां अगर आपके विचार बन ही रहें हैं भोजपुरी फिल्म देखने की तो 'लागल रहा बताशा' फिल्म देखें अगर आनंद से न भर गए तो कहिएगा ...भोजपुरी फिल्म की इतिहास की यह पहली फिल्म है जो बिल्कुल ही साफ सुथरी फिल्म है, मै इस फिल्म की कोई बहुत तारीफ नही कर रहा हूं यह हकीकत है ।भोजपुरी में मैंने पहली ऐसी फिल्म देखी है, जो इतनी साफ सुथरी फिल्म है ,साथ इस फिल्म की एक और खास़ बात यह है की यह फिल्म शिक्षाप्रद भी है ।फिल्म नैतिकता से भरपूर है, फिल्म को कामेडियन आर्टिस्टों को नजर में रखकर बनाई गई है ,फिर भी फिल्म पूरी तरह से कामेडी फिल्म नही कहेंगे यह फिल्म कोमेडी के साथ साथ एक अच्छी 'इमोशनली लव स्टोरी 'भी कही जा सकती है ।फिल्म भोजपुरिया परिदृश्य पर ही आधारित है । फिल्म की पटकथा बहुत ही बहुत भावपूर्ण है,

कॉमेडी के साथ यह शिक्षा भी देती है।यह भी कह सकते हैं की एक टिकट में दो शो ।फिल्म की कहानी बहुत सहज और सरल ढंग से लिखी गई जो दर्शकों अपनी खींचती है, दर्शक बैठने के बाद पूरी फिल्म देखकर ही उठेगा बहुत ही लवली स्टोरी है।

'लागल रहा बताशा' फिल्म भोजपुरी फिल्मों को श्रृंखला में एक आदर्श फिल्म कहलाने के काबिल है।फिल्म की कहानी एक गांव 'जमुहट'के सात मित्रों की कहानी है ,इस फिल्म में साथ दोस्त होते हैं संयुक्त रूप से एक 'नौटंकी 'ग्रुप बनाकर उसी से अपनी रोजी रोटी चलाते हैं , मगर फिल्म मोड़ तब आती है, जब आम्रपाली जी हिंदी अभिनेत्री रहती हैं और जो मुंबई से भोजपुरी सीखने उसी गांव में आ पहुंचती जहां सात नमूने नौटंकी ग्रुप चलाते होते हैं ,जी हां सही समझे हैं आप हां भाई उसी गांव' जमुहाट'में ही और सरपंच के आदेशनुसर ही आम्रपाली जी को भोजपुरी भाषा सिखाने की पूरी जिम्मेदारी उन्हीं नौटंकी ग्रुप को दी जाती है ।इधर फिल्म का मुख्य पात्र जिसका नाम 'बताशा 'मतलब मनोज टाइगर जो पहले से ही आम्रपाली को भगवान की तरह पूजते रहते हैं ,मतलब आम्रपाली के जबरदस्त दीवाना रहे हैं, आम्रपाली जब गांव में आने के बाद भोजपुरी सीखते समय सातो मित्रों से खूब घुल मिल जाती हैं ।सभी से काफी स्नेह भी पाती हैं, देखते ही देखते' मनोज टाईगर 'वास्तव में आम्रपाली से प्रेम कर बैठते हैं उधर आम्रपाली तो अनजान हैं, उनका सगाई भी हो चुका होता है , और चंद दिनों में वह अपने अपने मंगेतर से विवाह करने वाली होती हैं। ,जब आम्रपाली का मंगेतर उन्हें मुंबई ले जाने के लिएआता है तब 'मनोज टाइगर' को इटका लगता है , इसको लेकर उनके मित्र समझाते भी हैं की भूल जाओ मगर प्रेम तो प्रेम है। ओ माई ये पूरी कहानी मै

ही बता दूंगा तो आप देखेंगे क्या ? आप खुद देखिएगा फिल्म में आगे क्या होता है?.....फिल्म के शुरुवात में 'कल्याण सेन'जो 'रंगाश्रम'थियेटर गोरखपुर के हैं , वो बहुत छोटा ही रोल किए हैं मगर अभिनय से बांध देते हैं ,आनंद मोहन जी जो डाक्टर रहते हैं उन्हीं पास पेट की दवा लेने आते हैं मरीज के रूप में नाम रहता है चुटकी उनका अभिनय बहुत ही सुंदर लगता है । फिल्म में , 'मनोज टाईगर 'और 'आम्रपाली दुबे'जी मुख्य भूमिका में हैं इनकी बेहतरीन अदाएगी बहुत ही आकर्षित करती है दर्शक को लुभाती है। , फिल्म हंसा हंसा कर लोट पोट कर देती है। लेकीन यह फिल्म अंत में जाकर सीरियस हो जाती है , मनोज टाईगर

और आम्रपाली जी ने जबरदस्त अभिनय किया है ।फिल्म में प्रेम किसी को भी मुक्कमल नही मिलता है ।फिल्म की हीरोइन 'टाईगर'को कभी प्रेमी स्वीकार नहीं करती है। जबतक वह उन्हें समझती है ,तबतक बहुत देर हो चुकी होती है।

फिल्म का टाइटल सॉन्ग बहुत ही आकर्षित करता है ।इस फिल्म में 'सीमा सिंह 'आइटम सॉन्ग के द्वारा दर्शकों को खूब लुभाती हैं, फिल्म में लिरिक्स 'प्यारे लाल यादव कवि' जी के हैं ।साउंड मदन सिंह जी का है, सिनेमेटोग्राफी फिरोज जी का गजब का है।

म्यूजिक 'ओम झा जी' का है ।फिल्म में गजब की सिनेमेटोग्राफी हुई है , फिल्म की शूटिंग उत्तरप्रदेश के 'देवरिया' जिला के नजदीक 'बैतालपुर 'के पास एक गांव में किया गया है ।फिल्म देशी क्लाइमेट पर आधारित है ,फिल्म अधिकतर शूटिंग देवरिया में की गई है ,कुछ शूटिंग मुंबई में भी किया गया है ।फिल्म के डायरेक्टर 'आलोक विषेन'

जी द्वारा बहुत मेहनत किया है ,ओम जी की संगीत भी लाजवाब है ।अविनाश दिवेदी , आनंद मोहन, प्रकाश जायसवाल ,संतोष श्रीवास्तव ,के जी गोस्वामी , विनोद मेहरा , सी पी भट्ट, महेश आचार्य ,सोनू पांडेय , धामा वर्मा , संजय पांडेय , किरण यादव जो बताशा के मां की भूमिका में हैं ,वो भी इसमें कॉमेडी करती देखी जा सकती हैं, कहने का मतलब यह फिल्म है तो कॉमेडी लेकिन इसे लवस्टोरी भी है , थोड़ी हलकी फुल्की फाइट भी है अतः पूरी तरह से ड्रामा फिल्म है ।दर्शकों को खूब पसंद आएगी ,सभी कलाकारों ने बहुत मेहनत किया है फिल्म में दिखती है मेहनत सभी की , शानदार फिल्म है , पैसा वसूल फिल्म है ।संगीत ,नृत्य , मेकप, एडिटिंग , लोकेशन , ड्रेसअप सभी किफायती हैं, मगर असरदार है ,सभी खूब आकर्षित करते हैं।

भोजपुरी में ऐसी साफ सुथरी सुंदर फिल्में बहुत कम बनती हैं इसलिए सभी भोजपुरी प्रेमियों आप यह फिल्म 'लागल रहा बताशा'अवश्य देखें यह साफ सुथरी अच्छी मूवी है पूरे परिवार के साथ यह देखी जा सकती है

प्रस्तुतकर्ता
नीरज कुमार सिंह

स्वामी, मुद्रक प्रकाशक पंकज धर द्विवेदी द्वारा जनप्रकाशन प्रेस रौडसाहब का धर्मशाला से मुद्रित एवं 45 बादशाहबाग जगन्नाथपुर से प्रकाशित।
सम्पादक : पंकज धर द्विवेदी
ई–मेल – ghoonghatkibagawat@gmail.com

वैधानिक चेतावनी :
यद्यपि इस अंक में प्रकाशित समाचारों/अग्रलेखों कविताओं आदि का संकलन करते हुए इस बात का पूरा ख्याल रखा गया है कि वे पठनीय, सुस्पष्ट, सुग्राह्य, हों। द्वितीयतः उनके प्रस्तुतिकरण को भाषीय, व्याकरणीय, आदि दृष्टियों से भी त्रुटिहीन रखने का पूरा प्रयास किया गया है। बावजूद इसके प्रूफिंग, संकलन, संपादन, मुद्रण एवं प्रकाशन में किसी प्रकार की कोई त्रुटि आपके दृष्टिपथ में उभरकर आती है, आशा है सुधी पाठकगण, क्षमा करते हुए उसे रेखांकित कर हमारे सम्पादकीय विभाग, (45, बादशाहबाग, जगन्नाथपुर, गोरखपुर) अथवा समाचार पत्र के ई–मेल पर प्रेषित करेंगे जिससे उन त्रुटियों की पुनरावृत्ति न हो।
इसके अतिरिक्त हमारे विद्वतजन जो सम्पादकीय विभाग में सेवारत हैं, वे सामग्री की मांग के अनुसार आवश्यक फेरबदल करते रहते हैं। ऐसे में आपका यह भी दायित्व होता है कि विभागीय सहयोगियों के दायित्वों का स्मरण भी यथा–समय दिलाते रहना पाठकों की जागरूकता का द्योतक है। आपकी जागरूकता हमारा संबल है।
• त्रुटियों को मानवीय स्वभाव के अन्तर्गत माना जाता है। इसके लिए स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक अथवा सम्पादक जिम्मेदार नहीं होंगे। इस अंक में प्रकाशित समाचारों के लिए उत्तरदायी सूचना प्रदाता होंगे।
• प्रत्येक विवाद का निस्तारण स्थल न्यायालय गोरखपुर होगा।